1988

ॐ नमः शिवाय

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ।।८।।

श्री शक्ति शिवक्षेत्र
बैजनाथ मन्दिर

संक्षिप्त वर्णन

- ० श्री गोकर्ण शक्ति पीठ एवं शिवक्षेत्र,
- ०० जालन्धर पीठान्तर्गत श्री तारा (महोग्रा) सिद्ध पीठ (यन्त्र),
- वैद्यनाथ(बैजनाथ) ज्योतिर्शिवलिंग

...कर्त्ता एवं लेखक
...शर्मा-बैजनाथ, (जिला कांगड़ा) हि० प्र०

H
726.1 Sh 23 S

H
726.1
Sh 23 S

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SHIMLA

जी

चुनी लाल शर्मा
(संग्रहकर्त्ता एवम् लेखक)

ॐ नमः शिवाय

वन्दे महानन्दमनन्तलीलं महेश्वरं सर्वं विभुं महान्तम।
गौरीप्रियं कार्तिक विघ्नराजसभुम्दवं शंकरमादि देवम ।।

श्री शक्ति शिवक्षेत्र

बैजनाथ मन्दिर

संक्षिप्त वर्णन

० श्री गोकर्ण शक्ति पीठ एवं शिवक्षेत्र,

०० जालन्धर पीठान्तर्गत श्री तारा (महोग्रा) सिद्ध पीठ (यन्त्र),

००० श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (बैजनाथ) ज्योतिर्शिवलिंग।

संग्रहकर्त्ता एवं लेखक

चुनी लाल शर्मा-बैजनाथ, जिला कांगड़ा (हि० प्र०)

सर्वाधिकार लेखकाधीन

मुद्रक जनता प्रिंटिंग बैजनाथ
(हि० प्र०)

Library IIAS, Shimla
H 726.1 Sh 23 S
G 1312

संस्करण प्रथम संस्करण ५०० सं० २०४५

H
726.1
Sh 23 S

मूल्य रु० 15-00

G-1312
11-5-92

पुस्तक मिलने का पता :—

चुनी लाल शर्मा

आशापुरी मन्दिर मार्ग

पो० ओ० बैजनाथ-176125

जिला कांगड़ा (हि० प्र०)

विषय सूची

1) नम्र निवेदन 1
2) प्राकृतिक सौन्दर्य 9
3) क्षेत्र का धार्मिक महत्त्व 11
4) श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ ज्योतिर्शिवलिंग 19
5) श्री बैद्यनाथ का बैजनाथ नाम कैसे प्रसिद्ध हुआ 21
6) मन्दिर निर्माण 26
7) शिलालेखों का समय, महत्त्व एवं अनुवाद 40
8) मन्दिर दर्शन 48
9) परिक्रमा 58
10) शिल्प एवं वास्तुकला 63
11) बैजनाथ मन्दिर की परम्पराएं 68
12) बैजनाथ के अन्य धर्म स्थल 71
13) पर्यटन 73
14) पूजा एवं स्तोत्र 74
15) शक्ति शिव तत्त्व 79
16) दो शब्द निवेदन 87

शोध परक जानकारी

1) गोकर्ण शक्ति पीठ एवं शिवक्षेत्र

2) श्री तारा (महोग्रा) सिद्ध पीठ एवं शक्ति यन्त्र चित्र

3) उत्तर दिशा के श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ ज्योतिर्शिवलिंग

4) वारणावत राजा का अपभ्रंश ही वाणावट राजा के नाम से जाना जाता है पाण्डवों का वारणावत में आना तथा मन्दिर निर्माण तद्पश्चात पुनः निर्माण आदि की कड़ियां ।

5) मन्दिर में श्री शिव जी के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों ध्यान एवं देवी देवताओं का (संक्षिप्त) वर्णन

(धर्म ग्रन्थों के प्रमाण, प्रत्यक्ष और अनुमान सहित जानकारी)

नोटः— बैजनाथ क्षेत्र के अन्य धर्म स्थलों की (शोध पूरक) रहस्यमयी जानकारी दूसरे भाग में प्रस्तुत की जा रही है ।

卐

ॐ नमः शिवाय

नम्र निवेदन

नमः शिवाय साम्बाय सगुणाय ससूनवे ।
प्रधान पुरुषेशाय सर्गास्थित्यन्तहेतवे ॥

देव भूमि हिमाचल प्रदेश के अति रमणीय परम पावन श्री शिव शक्ति के प्राचीन धर्म स्थल बैजनाथ में आकर यात्री जब प्रथम बार प्राचीन शिव मन्दिर के दर्शन करते हैं तो आश्चर्य चकित होकर सोचने पर विवश हो जाते हैं कि, इस स्थान की प्राकृतिक सौन्दर्य के अतिरिक्त वह कौन सी महत्ता है जिसके कारण प्राचीन काल में इस सदर दर्गम वन्य और पहाड़ी क्षेत्र में इतना भव्य और अनुपम निर्माण कराया गया, श्री शिवलिंग के दो भाग क्यों हैं और किसके द्वारा कब स्थापित किया गया था, तथा यह मन्दिर किस ने और कब बनवाया था। इस स्थान का नाम बैजनाथ कैसे प्रसिद्ध हुआ ? इत्यादि प्रश्नों के शास्त्र सम्मत उत्तर पाने की जिज्ञासा यात्रियों के मन में बनी रहती थी। इस अति विशिष्ट प्राचीन धर्म क्षेत्र और मन्दिर पर कुछ लिखना बाल सुलभ चापल्य ही माना जाएगा। फिर भी यात्री महानु-भावों के आग्रह पर "श्री शक्ति शिव क्षेत्र बैजनाथ मन्दिर" नाम्नि इस लघु पुस्तिका में संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास मात्र किया जा रहा है। श्री बाबा बैजनाथ जी की कृपा से पुस्तिका लिखने की प्रेरणा श्री करपात्री जी महाराज से सम्बन्धित एक विद्वान महात्मा जो कि 1980 के लगभग यहां आए थे, के इन शब्दों से मिली थी - " आज 4–5 दिनों से 5–7 मील के

क्षेत्र में कई एक व्यक्तियों से मिल चुका हूं पर इतनी सी जानकारी जो अब मिली है इसे आप किसी भी भाषा में लिख डालो, जीवन का कोई भरोसा नहीं होता है।" विद्वान महात्मा जी के इन शब्दों से प्रेरणा पाकर सम्बन्धित धर्म ग्रन्थों व पुस्तकों से जानकारी का संग्रह करके महात्मा श्री दयाशील जी की सेवा में प्रस्तुत किया, इन्होंने दया करते हुए दो सप्ताह का समय लगा कर इस जानकारी से सम्बन्धित धर्म ग्रन्थों और कल्याण आदि पुस्तकों को देखकर पुस्तक लिखने के लिए उत्साह बढ़ाया। उपलब्ध जानकारी को (संक्षिप्त में) पुस्तक का रुप देने के लिए कई बार लिखना पड़ा, इस कार्य में श्री शान्ति स्वरुप पुरोहित 'मरण्डा निवासी' और बिनोद जी ज्योतिकी 'चकोल निवासी' की सहायता के लिए इनका धन्यवादी हूं। तद्पश्चात इस (संक्षिप्त) लेख को श्री ज्योति प्रकाश जी, मुख्य पुजारी व मोहतमिम मन्दिर बैजनाथ, की सेवा में प्रस्तुत किया। इन्होंने बड़ी प्रसन्नता से पुस्तक छपवाने में सहायता सहित आशीर्वाद प्रदान किया।

बैजनाथ के क्षेत्र श्री शिवलिंग और मन्दिर के सम्बन्ध में प्राचीन जनश्रुतियों को लेकर यहाँ के सर्व साधारण को दृढ़ विश्वास है कि लंकापति रावण ने यहां तप किया था, मन्दिर पाण्डवों ने बनाया था और बिनवा नदी जो कि वर्तमान में मन्दिर की पश्चिम दिशा में प्रवाहित है, कभी पूर्व दिशा में थी।

सर्वप्रथम इन जनश्रुतियों पर विचार करते हुए :-

श्री शिवलिंग और लंका पति रावण :-

शिव महापुराण (अष्टम खण्ड अ० 14, 43, 46) के अनुसार लंका पति रावण ने कैलास पर तप किया तद्पश्चात

कुराह❀ में आकर पूजा और हवन कुण्ड में अपने नौ शीश आहुति करके श्री शिव जी को प्रसन्न किया और वरदान पाकर दो भागों में विभाजित श्री शिवलिंग को मञ्जूषा में रखकर अपने नगर को ले जा रहा था, जो कि मार्ग में ही गौकर्ण क्षेत्र में श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ के नाम से स्थित हो गए, तद्पश्चात बैजनाथ के नाम से भी प्रसिद्ध हुए, इत्यादि। (इस कथा के अनुसार इस क्षेत्र को गौकर्ण क्षेत्र मानते हुए) बैद्यनाथ मन्दिर में श्री शिवलिंग के दो भाग होने से एक सूत्र तो प्रत्यक्ष में प्राप्त हो जाता है, दूसरे सूत्र गौकर्ण क्षेत्र का वर्णन अनेक धर्म ग्रन्थों में आया है। वाल्मीकीय रामायण उ० का० सर्ग 9 श० 47 में भी है। "गौकर्णस्याश्रमे" का ही उल्लेख है। योगिनीहृदय एवं ज्ञानार्णव के अनुसार 51 शक्ति पीठों में से 19, 21 और 23वें स्थानों पर क्रमश: ज्वालामुखी कुल्लान्तक (कुल्लू) और गौकर्ण शक्ति पीठ की उत्पति कही गई है (यह पूर्व कल्प की घटना है जबकि श्री सती जी का जन्म दक्ष प्रजापति के यहां हुआ था, तद्पश्चात कल्प में पार्वती जी का जन्म हिमाचल के राजा हिमवान के यहाँ हुआ और जालन्धर असुर के वध से 48 कोस में जालन्धर पीठ की उत्पति हुई) जा० पीठ महात्म्य के अनुसार जालन्धर असुर के वध के पश्चात् श्री शिव जी ने (जालन्धर पीठ अन्तर्गत) सिद्धपीठ पर आकर महोग्रा (तारा) की उपासना की थी। ब्रह्मलीन श्री स्व० तारा नन्द जी महाराज ने इस शक्ति पीठ पर अपनी पुस्तकों में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है। श्री शिवजी की शक्ति उपासना से सम्बन्धित "श्री तारा सिद्ध पीठ" त्रेता युग में लंकापति रावण से सम्बन्धित श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (बैजनाथ) के विभाजित शिवलिंगों की स्थापना होने से (यह गौकर्ण शक्ति पीठ) गौकर्ण

❀भरमौर और मणिमहेश के बीच कुलाह नाम का स्थान कुराह शब्द का अपभ्रंश है। मणिमहेश (कैलास) 78° अक्षांश अथवा कन्याकुमारी और रामेश्वरम् के ठीक उत्तर में विद्यमान है। कुलाह (कुराह) इस के लिये अन्तिम पड़ाव है।

शिव क्षेत्र के नाम से भी जानी जाती थी। नीलतन्त्र और जालन्धर पीठ महात्मय में यहां पर दुर्लभ नगर और तारा शिवालय का स्पष्ट वर्णन किया गया है। त्रिगंत और गौकर्ण शिव क्षेत्र के सम्बन्ध में गर्ग संहिता के विशव जित खण्ड अ० 10 श०15,23 में वर्णन है कि यादव सेना सदा वर्षा वाले पहाड़ों से होकर, गौकर्ण शिव क्षेत्र का दर्शन करते हुए त्रिगर्त की विजय को गई थी। इस प्रकार प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुमान द्वारा इस क्षेत्र की धर्मग्रन्थों में वर्णित गौकर्ण क्षेत्र के रुप में सिद्धि हो जाती है तथा यह स्थान लंकापति रावण से सम्बन्धित (उत्तर का) गौकर्ण क्षेत्र है, जहां श्री चन्द्र भाल बैद्यनाथ जी की स्थापना हुई थी। (इस प्रकार रावण से सम्बन्धित यह जनश्रुति सत्य सिद्ध हो जाती है)

पाण्डव और मन्दिर निर्माण :--

महाभारत के आदि पर्व में वर्णन आता कि दुर्योधन आदि ने पाण्डवों को जलाने का षड्यन्त्र रचकर वारणावत्त राज्य में भेजा था। नगरोटा बगवां के पास पठियार ग्राम में एक स्थान को लाखा मण्डल (मण्डप) बताया जाता है और वारणावत्त राजा का अपभ्रंश ही बाणवट राजा के नाम से प्रचलित है, इन व्यापक जनश्रुतियों और दूसरी अनेक घटनाओं से भी पाण्डवों के इस क्षेत्र में दो वर्षो तक निवास और भ्रमण करते रहने की पुष्टि हो जाती है। इस प्रकार इस अवधि में यहां पाण्डुओं द्वारा मन्दिर निर्माण की बात युक्तियुक्त ही लगती है। बिनवा नदी के मार्ग परिवर्तन के स्पष्ट प्रमाण मौजुद हैं और वर्तमान में नदी द्वारा मन्दिर के साथ सीधी गहरी घाटी बना देने से यह अनुमान हो जाता है कि 2500 से 3000 वर्ष पूर्व किसी भयंकर प्राकृतिक प्रकोप के कारण ही यह मार्ग परिवर्तन हुआ है जिससे यहां द्वापर युगीन नगर और मन्दिर मलियामेट हो गए थे। मन्दिर में लगे हुए दोप्राचीन

शिलालेख जिन पर सर अलगजैण्डर कनिंगघम डायरैक्टर पुरातत्व-विभाग ने यहां दो बार आकर 1846 और 1849 ए० डी० में तथा डा० एम०ए० स्टीन ओरियैन्टल कालेज लाहौर ने 1892 ए० डी० में शोध की थी। अपने अनुवादों में इन शिलालेखों का समय 726 साका अथवा 804 ए०डी० माना है। इन शिलालेखों के अनुसार, जालन्धर व त्रिगंत नरेश श्री जय चन्द्र के समय यहां "कीरग्राम" के राजा श्री लक्ष्मण चन्द्र के राज्य में रहने वाले मन्युक और आहुक दो व्यापारियों ने यहां श्री बैद्यनाथ जी के आश्रम रहित श्री शिवलिंग को देखा और मन्दिर का पुनः निर्माण कराया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 804 ए० डी० से पूर्व श्री शिवलिंग और मन्दिर भी यहाँ मौजूद था। मन्दिर में गर्भ गृह द्वार के पास श्री गंगा और यमुना जी की मूर्तियां 1500-2000 वर्ष पुरानी लगती है। कांगड़ा घाटी में 2500 वर्ष पुराने मन्दिर मौजूद थे इन्हीं में से देवी शंकर नाम के एक मन्दिर का उल्लेख **History of the Panjab Hill States Vol I** (1982) **Page**–137 पर आया है। जिसे शेरशाह सूरी की सेना ने 1540 ए०डी० में तोड़ा था। इस पुस्तिका में महाभारत काल के मन्दिर से लेकर वर्तमान काल तक का व्यौरा (संक्षिप्त में) दिया गया है। प्राचीन काल में जब यह मन्दिर बनाया गया था इसके प्रत्येक शिलापट पर कोई न कोई आकृति उत्कीर्ण की गई थी इस समय जितने भी साफ सपाट पत्थर नजर आते हैं ये 1786 ए० डी० में महाराज श्री संसार चन्द्र जी और 1905 ए० डी० के भूकम्प के पश्चात पुरातत्त्व विभाग द्वारा की गई मुरम्मतों में लगाए गए हैं। इस मन्दिर में देवी-देवताओं की रचना शास्त्र सम्मत की गई है। शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मनुष्य जीवन के चार फल बतलाए गए हैं (श्री शिव जी चारों फलों के प्रदाता माने जाते हैं), श्री शिवजी के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रुप, चारों ध्यान यहां दर्शाए गए हैं प्राचीन वास्तु कला और शिल्प कला के अनेक अंगों को लेकर इस प्राचीन मन्दिर पर लिख

पाना आसान नहीं है अतः इसे एक लघु प्रयास ही कहा जा सकता है।

बैद्यनाथ तारासिद्ध पीठ :–

यह त्रिभुज अथवा शक्ति यन्त्र आकार में 12 कोस की परिक्रमा में विद्यमान है, जिसके मध्य अथवा विन्दु स्थान पर श्री शक्ति और शिव का यह मन्दिर स्थित है। हिन्दुओं और वोद्धों में श्री तारा का विशेष महत्व है दोनों ही ॐकार को 'तार' कहते हैं और ॐकार (ब्रह्म) की शक्ति को ही तारा कहा जाता है। तारा के सम्बन्ध में बिपुल संस्कृत स.हित्य उपलब्ध है। वौद्धों में ही (33) तैंतीसग्रन्थ तारा के विषय पर हैं। उत्तर भारत से जाकर श्रीराम जी ने दक्षिण भारत में श्री रामेश्वर शिवलिंग स्थापित किया था और लंकापति रावण द्वारा दक्षिण से आकर उत्तर भारत में श्री चन्द्र भाल बैद्यनाथ जी के यह शिवलिंग स्थापित हुए थे। इस प्रकार यह परम प्राचीन धर्मस्थल श्री तारा के उपासक वौद्धों, दक्षिण के रावण प्रेमियों और अन्य शाक्त शैव आदि सभी भारतीयों के लिये पूजनीय और श्रद्धा का केन्द्र होने के साथ ही एकता का प्रतीक है*।

पाठक वृन्द, प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुमान द्वारा स्वयं इन सब तथ्यों पर विचार करते हुए नई जानकारी देने में स्वतन्त्र हैं।

वन्दे शिव तं प्रकृतेरनादिं, प्रशान्तमेकं पुरुषोत्तमं हि।
स्वमयया कृत्स्नमिद सृष्टवा नभों वदन्नर्वहिरास्थितो यः॥

*बैजनाथ मन्दिर व श्री शिवलिंग की खोज का दूसरा सिरा हमें दक्षिण भारत में किसी प्राचीन पुस्तक से, जिसमें रावण की शिव उपासना का वर्णन हो उसमें भी भली भांति मिल सकती है।

संग्रह की गई जानकारी को ज्यों का त्यों लिखने पर एक बड़ा ग्रन्थ ही बन जाता था जिसे छपवाना कठिन जानकर संक्षिप्त रुप दिया गया हैं। इस कार्य में सर्व श्री जैयन्ती दास जी नाग, अमर चन्द जी कटोच, डा. दुनी चन्द जी पराशर और अन्य शुभचिन्तकों द्वारा पुस्तिका के लिए सामग्री उपलब्ध कराने और श्री ज्योति प्रकाश जी मुख्य पुजारी मन्दिर 'बैजनाथ' श्रीमति तारा रानी, श्री बलदेव राज नन्दा और श्री शान्ति कुमार सूद द्वारा दो सो पुस्तकों के लिए ऐडवाँस व आर्डर दे कर की गई सहायता के लिए इन सब का धन्यवादी हूं।

पुस्तिका को छपवाने और पाठकों के हाथों तक पहुंचाने में अनेक प्रकार की कठिनाईयां थीं, जिन्हें दूर करने के लिए श्री नाथ जी महाराज (ततवानी वाले बाबा) धूना आशापुरी बैजनाथ ने अपनी अनुक्षण कृपा द्वारा अनुगत को अपना शुभ आशीर्वाद दे कर कृतकाम किया।

पाठक गणों की सेवा में नम्र निवेदन है कि इस लघु पुस्तक को अति साधारण प्रयास मात्र ही समझा जाए और सभी प्रकार की त्रुटियों को क्षमा करने की कृपा करते हुए अपने सुझाव देकर कृतार्थ करें।

वि० स० २०४५ — विनीत

पता :- श्री आशापुरी मन्दिर मार्ग, — चुनी लाल शर्मा

गांव व डाकघर बैजनाथ,
तहसील बैजनाथ, जिला कांगड़ा
हिमाचल प्रदेश। पिन-176125

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं, विभु विश्वनाथं विभूत्यगंभूषम् ।
विरुपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं, सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ।।

अर्थात् :–चन्द्र, सूर्य और अग्नि तीनों जिनके नेत्र हैं उन विरुपनयन महेश्वर, देवेश्वर, देव दुःखदलन, विभु, विश्वनाथ विभूतिभूषण, नित्यानन्द स्वरुप, पञ्चमुख भगवान् महादेव की मैं स्तुति करता हूं ।

आत्मात्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणिसर्वागिरो
यद्यत्कर्म करोमितत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।

अर्थात् :–हे शम्भो ! मेरी आतमा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आप की पूजा है, निद्रा समाधि हैं, मेरा चलना फिरना आप की परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शव्द आप के स्त्रोत हैं, इस प्रकार में जो जो भी कर्म करता हूं वह सब आपकी आराधना ही है ।

स्वा० वखतावर नाथ जो महाराज

(ततवानी वाले बाबा जो)

(बाबा जो पुरातन शिव लिंग के सन्मुख)

❀

धूना, श्री आशापुरी शिव मन्दिर

वैजनाथ जिला कांगड़ा (हि० प्र०)

ॐ नमः शिवाय

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्ट सिद्धिम् ।

कारुण्यकरुमलकञ्चलोचनं नौमि शङ्करमनङ्ग मोचनम ॥

विश्व प्रसिद्ध भारतवर्ष सदा से अध्यात्म का पथ प्रदर्शक रहा है । धर्म एवं संस्कृति की धारा यहां निरन्तर प्रवाहरत है । इनके मुख्य कारणों में से यहाँ के तीर्थ धाम आदि की महा महिमामयी मान्यता भी एक प्रमुख कारण है। ऐसे ही एक अतीव पुण्यशाली तीर्थ का वर्णन यहाँ किया जा रहा है ।

देव भूमि हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा की तहसील बैजनाथ का मुख्य नगर बैजनाथ अपने प्राचीन शिव मन्दिर, प्राकृतिक सौंदर्य और स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के लिए प्रसिद्ध है ।

प्राकृतिक सौन्दर्य :—

समुन्द्र तल से 1000 मीटर की ऊंचाई पर सदा बसन्तमयी धौलाधार के आञ्चल में हिमाच्छदित पर्वतों और हरी भरी वन्य श्रेणियों से सुशोभित इस परम् पावन प्राचीन धर्म स्थल के पूर्व में विलकुल साथ लगती नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित अर्ध चन्द्राकार अति रम्य पहाड़ी है । पूर्णमासी और तत्पश्चात दिनों में हरे भरे वृक्षों की ओट में से अर्ध चन्द्राकार पहाड़ी के पीछे से उदय होते हुए चन्द्रमा का दृश्य अति मनमोहक लगता है । पश्चिम में मीलों दूर तक हरे भरे खेतों और मैदानों को पार करती हुई दृष्टि सदूर क्षितिज में विलीन हो जाती है । वर्षा ऋतु में सूर्यास्त के समय स्वर्णमयी रस्मियाँ रंग बिरंगे बादलों के साथ क्रीड़ा

करती हुई आकाश के चित्रपट पर अदभुत दृश्य प्रस्तुत करती हैं। उत्तर में शिव मन्दिर के चरणों में नाना प्रकार के वृक्षों और लताओं से मण्डित हरी भरी गहरी घाटी बनाकर पांचवलखाती हुई, सांप की तरह कुण्डली मारे निर्मल जल वाली पवित्र कन्दुका विन्दुका "विनवा" नदी पहाड़ों की गोद में किसी नव यौवन कन्या के सदृश्य उछलती कूदती हुई प्रवाहरत है। नदी के साथ लगते सीढ़ी-नुमा खेतों वाली पहाड़ियों के पीछे धने, आरण्य और उतङ्ग हिमकिरीट धारण किये धौलाधार के पर्वत विद्यमान हैं। वर्षा ऋतु में जगलों और पर्वतों से निर्झर झरनों के ऊपर तैरते और क्रीड़ा करते हुए वारिद खण्ड मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। शरद् ऋतु में वर्फ की श्वेत ओढ़नी ओढ़े हुए पर्वत शृंखलाओं का दृश्य ओर भी नयनाभिराम हो जाता है। दक्षिण दिशा में कुछ दूरी पर हरी-भरी पहाड़ियों वाली वन्य श्रेणियाँ विद्यमान हैं। कुल मिलाकर प्रकृति ने एक साथ सभी रम्य दृश्य इस परम पावन स्थल पर एकत्रित कर रखे हैं। अंग्रेजी शासन में अंग्रेज अधिकारी अपने पीने के लिये प्रतिदिन यहां के जल स्रोतों से पानी रेल द्वारा लाहौर मंगवाया करते थे तथा नवाव वहावलपुर ने इसी पानी के सेवानार्थ यहां से 5 किलोमीटर पर अल्हालाल नाम का पैलेस वनवाया था, अब इसको तारागढ़ के नाम से जानते हैं।

बैजनाथ के पर्यटन एवं धार्मिक स्थल पर आकर पर्यटक एवं श्रद्धालु जब प्राचीन शिवालय के दर्शन करते हैं तो आश्चर्यचकित होकर सोचने पर विवश हो उठते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व इस सदूर ऊबड़ खाबड़ दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में इतना अनुपम विलक्षण निर्माण क्यों, कब और किसके द्वारा सम्भव हो पाया होगा। इस क्षेत्र की प्राकृतिक सौन्दर्य के अतिरिक्त कौन सी ऐसी विशेषता है जो इस स्थान के महत्व को अंकित करती है। दो भागों में विभक्त

श्री शिवलिंग की स्थापना क्यों की गई है तथा बैद्यनाथ का नाम बैजनाथ कैसे प्रसिद्ध हुआ ? इत्यादि प्रश्नों के शास्त्र सम्मत प्रमाण, प्रत्यक्ष और अनुमान सहित उत्तर पाने की जिज्ञासा यात्रियों के मन में चिरकाल से चली आ रही थी। इस पुस्तिका में इन्ही प्रश्नों के उत्तर धार्मिक ग्रन्थों और इतिहास आदि से प्रमाण संग्रह करके संक्षिप्त रुप में दिये जा रहे हैं।

क्षेत्र का धार्मिक महत्व

1 जालन्धर पीठ ,— (संक्षिप्त वर्णन)

श्रीं शिव महापुराण में वर्णन है कि एक समय देवराज इन्द्र और देवगुरु वृहस्पति जी कैलास पर्वत पर श्री महादेव जी के दर्शनों के लिये गये। श्री महादेव जी इन्हें गूंगे के रुप में मिले। जब इन्द्र ने इनसे प्रश्न किए और उत्तर न मिला तो अभिमान के मद में भरकर इन्द्र ने गूंगेरुपधारी महादेव जी को मारने के लिये वज्र उठा लिया तथा अपमान किया। इस पर महादेव जी क्रोधित हो उठे। देव गुरु श्री वृहस्पति जी ने महादेव जी को पहचानते हुए इनकी स्तुति और प्रार्थना की तथा इन्द्र को मृत्यु दण्ड से बचा लिया। इसी प्रकार वृहस्पति जी इन्द्र को जीवदान दिलवाने के कारण "जीव" नाम से प्रसिद्ध हुए और श्री महादेव जी ने अपना तेज समुन्द्र के जल में फैंक दिया जिससे बड़े भयंकर शब्द के साथ जालन्धर असुर की उत्पति हुई। महान प्रतापी जालन्धर असुर ने सभी देवताओं को परास्त करके उनके राज्य और सभी रत्न छीन लिये। देवताओं की योजनानुसार श्री नारद मुनि ने जालन्धर असुर के पास जाकर बड़ी प्रशंसा की और कहा कि आपके साथ सिंहासन पर बाम भाग में एकमात्र नारीरत्न की कमी रह गई है जिसके बिना दूसरे सभी रत्न व्यर्थ लगते हैं। इस पर जालन्धर असुर ने नारियों में नारी रत्न श्री पार्वती जी (हिमाचल पुत्री)

को प्राप्त करने के लिए श्री चन्द्रमौलि महादेव जी के (हिमाचल स्थित) कैलाश पर आक्रमण कर दिया। परिणामस्वरुप श्री ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी तीनों देवों ने मिलकर जालन्धर असुर का वध किया। व्यास नदी (कालेश्वर महादेव) से हिमालय (बैजनाथ) तक द्वादश योजन का क्षेत्र जालन्धर असुर से युद्ध और वध के कारण जालन्धर पीठ कहलाया। जिस समय जालन्धर युद्ध में जर्जरित होकर मरणासन्न हुआ तब वीरासन में स्थित था उस समय तीनों देवों ने जालन्धर असुर को वरदान दिया था :—

(1) "अद्यारभ्तुयः कोपिक्षेत्रेस्मिन्मृत्युमेष्यति ।
सोपिचास्मप्रसादेन विष्णसायुज्यमाप्स्यति ।।"

(2) "काशी मृतानां जन्तूनां जायते रुद्र रुपता ।
यथा तथा पचं चत्वं गतानां विष्णु रुपता ।."

(जालन्धर पीठ महात्मय)

अर्थात इस क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त होने वालों को विष्णु सायुज्य प्राप्त होगा (जालन्धर पीठ धनुष आकार में है जिस के मध्य वाण रुप से प्रवाहत पवित्र नदी का नाम वाण गंगा है) बैजनाथ इसी जालन्धर पीठ के पूर्व (ऐशान) कोण में स्थित हैं। वास्तव में बैजनाथ सांस्कृतिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व का त्रिकोण है।

2. जालन्धर पीठ अन्तर्गत तारा सिद्ध पीठ :—

जालन्धर पीठ महात्मय के अनुसार जालन्धर असुर के वध किए जाने और असुर पत्नी पतिव्रता श्री वृन्दा के सती हो जाने पर तीनों देवों को क्षोभ प्राप्त हुआ और प्रायश्चित स्वरुप श्री ब्रह्मा जी ने श्री विमला देवी की और श्री विष्णु जी ने त्रिपुर

सुन्दरी की उपासना की। तद्पश्चात श्री अम्बिका जी के वचनानुसार दोनों देवों ने श्री महादेव जी के पास जाकर जालन्धर-पीठान्तर्गत श्री तारा सिद्ध पीठ में श्री तारा (महोग्रा) के पूजन के लिए प्रार्थना की। इस बारे में जालन्धर पीठ महात्मय से कुछ श्लोक दिए जा रहे हैं—अम्बिका जी कहती हैं :—

"यावज्जालन्धरे क्षेत्रे गत्वा तेन समर्हणम्।

क्रियते न महोग्राया स्तावत्तस्यतु व्यग्रता॥

नगच्छति०......(इत्यारम्भ)

"महोग्रां सिद्ध पीठे तु नाराधयति यो भृशम्।

तस्य विभ्रम बिच्छेदो न कदाचिद्भिवश्यति॥" (इत्यन्तम्)

अर्थात जब तक श्री शिवजी जालन्धर क्षेत्र की महोग्र सिद्ध-पीठ में श्री तारा का पूजन नही करेंगे तब तक उनके चित की व्यग्रता दूर न होगी। अथवा जो सिद्ध पीठ तारापुर में महोग्रा की आराधना नहीं करता है उसके विभ्रम का विच्छेद नहीं होता है। श्री विष्णु और व्रह्मा जी ने श्री शिवजी के पास जाकर प्रार्थना की:-

"यावध्दर ! त्वयागत्वाक्षेत्रे जालन्धरान्तरे।

न कृतं तु यथाशास्त्रं तारायाः परिपूजनम्

तावद्दैत्य वधोभ्दून्तं पातकं न प्रणश्यति॥"

अर्थात जब तक आप जालन्धरान्त र्गत सिद्ध पीठ श्री तारा जी का पूजन न करेंगे तब तक दैत्य वधोभ्दव पाप नष्ट नहीं होगा। इस प्रकार श्री शिवजी ने इस सिद्ध पीठ पर आकर तप द्वारा ब्रह्म विद्या तारा की प्राप्ति से दैत्य राज जालन्धर के वध से

उत्पन्न पाप से मुक्ति पाई। "तारयतितारा इतिश्रुतिः" अथवा "तार मस्या अस्ति सा तारा" अर्थात 'तार' ओंकार जिसका वाचक नाम हो उसको तारा कहते हैं। "तस्य वाचकः प्रणव :— इति योग दर्शने"। ब्रह्म अथवा ॐकार (तार) की शक्ति ही तारा है। ब्रह्मलीन स्व० श्री तारानन्द जी महाराज ने इस शक्ति सिद्ध पीठ पर कई एक पुस्तकें लिखीं थीं।

श्री शिवजी की उपासना स्थली श्री तारा सिद्ध पीठ 12 कोस की परिक्रमा में त्रिभुज अथवा शक्ति यन्त्राकार में व्याप्त है। इस के ऐशान कोण में श्री मुकुटेश्वर वायव्य कोण में श्री पल्लिकेश्वर और दक्षिण में श्री महाँकालेश्वर हैं। ये सभी आपस में चार-चार कोस की दूरी पर हैं। इसी त्रिभुज के अन्दर (श्री शिव मन्दिर की चारों दिशाओं में) $1\frac{1}{4}$ कोस की परिक्रमा में श्री तारा दुर्गा जी के चार प्राचीन स्थान (मन्दिर) हैं जिन्हें अब तारा माता, श्री आशापुरी माता (श्री नील सरस्वती), श्री तारणी देवी और श्री चामुण्डा के नामों से जाना जाता है। इस शक्ति यन्त्र के मध्य श्री शिव मन्दिर (तारा शिवालय) की परिक्रमा में ऐशान, वायव्य और दक्षिण दिशा के द्वार भी एक त्रिभुजाकार बनाते है। इस प्रकार इस शक्ति यन्त्र के मध्य अथवा बिन्दु स्थान पर श्री शिव जी स्थित हैं।

निराकारं परं ज्योति बिन्दुश्चाव्ययसञ्ज्ञकम्।
बिन्दु शब्दे न शून्यं स्यात, इति तकोल तंत्रे ॥

अध्यात्मिक अर्थ से "सिद्ध पीठे महा शुन्ये त्रयस्ते तारां विभावयेत" अर्थात त्रिकोणातर्गत शून्य का नाम ही सिद्ध पीठ अर्थात तारापुर है। दूसरे तन्त्रों में भी आया है 'महाशून्यस्थिता तारा' इति योग सारे तथाच—

"तन्मध्येतु त्रिकोणंस्या द्विद्युदाकाररुपकम् ।
बिन्दु द्वयंच तन्मध्ये विसर्ग रुपमव्ययम् ।।"
"तन्मध्ये शून्य दे देशेतु शिवः परमशंकरः" इत्यादि ।

अर्थात त्रिकोण के मध्य में परम शिव की स्थिति है । इसी सिद्ध पीठ को चित्ता भूमि भी कहते हैं—

"इमां ब्रह्म विद्यांखर्वानीलघम प्रभांज्वलच्चित्ता मध्य गतां द्वीपिचर्मोत्तरीयां इत्थं ध्यात्वा सपरिवारां पूजयेत्"। इति श्रुति ।

जालन्धर पीठ में ब्रह्माजी ने विमला देवी का और श्री विष्णु जी ने श्री त्रिपुर सुन्दरी का अराधन किया था, इन दोनों स्थानों का अद्यविधि पता नहीं लगता है । श्री शिवजी ने महोग्रतारा की उपासना सिद्ध पीठ में की थी, उस सिद्ध पीठ का नाम ही तारा-पुर है । यथा :-तारापुरं सिद्ध पीठं मित्युपक्रम्य – "ईशान्यां चक्रनाथ यबैद्यनाथस्य पूर्वतः । तारा पुर मितिख्यातं नगरं-भुविदुलंभम् । तत्रयत्नेन गन्तव्यं यत्रतारा शिवालय" - इति नील तन्त्रे । जालन्धर दीपिका में भी इस स्थान के विषय में लिखा है' यथाः— वैद्यनाथस्य पूर्वेहि कियद्धूरेचपादपः । अश्वत्थोअस्ति तदन्तेच तारिणी मक्ति दायिनी ।।"

जालन्धरपीठान्तर्गत तारा सिद्ध पीठ में साधक को शीघ्र ही सिद्धि होती है । आध्यात्मिक अर्थ से यह तारा पीठ शरीर के अन्तर्गत शिरःस्थ सहस्रार में ही है । जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है इस लिये इस ब्रह्माण्ड में भी इन बातों को मानना शास्त्र सिद्ध है ।

———

जालन्धर पीठ अन्तर्गत श्री तारा सिद्धपीठ–चित्र
(गोकर्ण शक्तिपीठ–महोग्रा सिद्धपीठ)

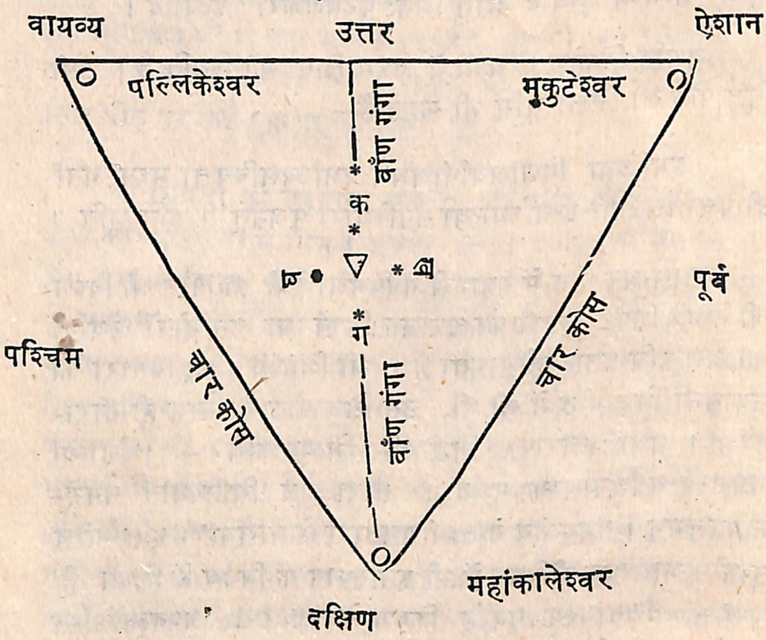

▽ श्री शिव मन्दिर (केन्द्र विन्दू स्थान)। सिद्ध पीठ

O शक्ति यन्त्र (त्रिभुज) 12 कोसों के तीन स्थान
पल्लिकेश्वर, मुकुटेश्वर व महांकालेश्वर

* क–श्री तारा मन्दिर वर्तमान नाम श्री तारा माता

* ख– ,, ,, ,, ,, ,, श्री आशापुरी माता

* ग– ,, ,, ,, ,, ,, श्री तारणी माता

* घ– ,, ,, ,, ,, ,, श्री चामुण्डा माता

——— वांण गंगा (वर्तमान विनवा) का प्राचीन मार्ग

(3) गोकर्ण शक्ति पीठ तथा शिव क्षेत्र

गौकर्ण क्षेत्र का उल्लेख कई एक धर्म ग्रन्थों में आता है। वालमीकीय रा० उ० का० सर्ग9 श०47 में रावन का तप के लिये हिमालय पर जाने के सम्बन्ध में, 'गौकर्णस्याश्रमे' का उल्लेख है। शिव पुराण अष्टम खण्ड में पश्चिम और उत्तर के शिवलिंगों के वर्णन में, पश्चिम और उत्तर के दो गौकर्ण क्षेत्र बतलाए गए हैं। पश्चिम के गौकर्ण क्षेत्र में, श्री गणेश जी द्वारा स्थापित 'महाबल नाम के शिवलिंग को रावण स्पर्श न कर सका था और उत्तर के गौकर्ण क्षेत्र में 'रावण द्वारा' लंका को ले जाए जा रहे श्री चन्द्र-भाल बैद्यनाथ जी के (विभाजित) शिवलिंग स्थाप्त हो गए थे। गौकर्ण क्षेत्र शब्द के अनुसार ऐसा क्षेत्र जिसकी तीन दिशाएं पहाड़ों और पहाड़ियों से घिरी हों और चौथी दिशा (दूर तक) खुली हो, अथवा गाए के कान जैसा आकार लिये हो' ऐसे क्षेत्र को ही गौकर्ण क्षेत्र कहा जाता है। बैजनाथ का क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप में ऐसा ही आकार लिये हुए गोकर्ण क्षेत्र है।* गोकर्ण शक्ति पीठ—शक्ति पीठों की उत्पत्ति के विषय में धर्म ग्रन्थों में वर्णन है कि-अपने पिता दक्ष प्रजाप्रति के यज्ञ में श्री सति जी ने श्री शिव जी का अपमान देखकर अपनी देह त्याग दी थी। श्री शिवजी ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया और श्री सति जी की देह को उठाए घूमते रहे। एवं देवमय श्री विष्णु जी ने श्री शिव जी के मोह की शान्ति और साधकों के कल्याण के लिये श्री सति जी के भिन्न-2 अंगों को भिन्न2 स्थानों पर गिरा दिया' वे ही 51 शक्ति पीठ कहलाए। योगिनी हृदय एवं ज्ञानार्णव के अनुसार 19वें स्थान पर ज्वाला मुखी पीठ हुई 'जहाँ अग्नि देव ने तप किया' 21वें स्थान पर कुलान्तक (कुल्लु) पीठ हुई और 23वें स्थान पर 'जहां श्री सती

जी के जट्ठर देश का पात हुआ वहाँ "छ" कार और गोकर्ण पीठ की उत्पति हुई थी। ज्वालामुखी, कुलान्तक (कुल्लु) और (यहां) गोकर्ण शक्ति पीठ की उत्पति की यह घटना पूर्व कल्प की है। वर्तमान कल्प में श्रीसती जी ने हिमाचल के राजा हिमवान के घर श्री पार्वतीं जी के नाम से जन्म लिया। तदपश्चात, जालन्धर असुर के वध से सम्वन्धित 48 कोस का क्षेत्र जालन्धर पीठ कहलाया था। पूर्व कल्प की गोकर्ण शक्ति पीठ वर्तमान कल्प में जालन्धर पीठ के अन्तर्गत ही विद्यमान होने के कारण जालन्धर असुरवध के पश्चात, (देवताओं द्वारा प्रार्थना किये जाने पर) इसी शक्ति पीठ पर आकर श्री शिव जी ने महोग्रा (तारा) की आराधना की थी। जिसका वर्णन आप "तारा सिद्ध पीठ" के प्रसंग में भी पढ़ आए हैं इस प्रकार इस शक्ति पीठ का सम्बन्ध श्री शिव जी से जुड़ गया था और त्रेता युग में रावण द्वारा लंका को ले जाए जा रहे श्री चन्द्र भाल वैद्यनाथ जी के (विभाजित) शिवलिंग इसी शक्ति पीठ (अथवा उत्तर के) गोकर्ण क्षेत्र में स्थापित हो गए थे। जिसके कारण यह क्षेत्र गोकर्ण शिव क्षेत्र के नाम से भी प्रसिद्ध हो गया। नीलतन्त्र में शक्ति (तारा) और शिव से सम्बन्धित यहां पर 'तारा शिवालय' का उल्लेख है। द्वापर युग में · गर्ग संहिता, वि० जि० खण्ड अ० 10 श० 15-23 के अनुसार – भारत वर्ष की विजय करते हुए यादव सेना' सदा वर्षा वाले पहाड़ों से होकर' गोकर्ण शिव क्षेत्र का दर्शन करते हुए त्रिगंत की विजय के लिये गई थी' इस से भी अनुमान होता है कि सदा वर्षा वाला गौकर्ण और त्रिगंत दोनों क्षेत्र एक साथ ही थे।

प्रत्यक्ष, प्रमाण और अनुमान से बैजनाथ का क्षेत्र ही उत्तर दिशा का गोकर्ण क्षेत्र है, जो कि शक्ति पीठ के रुप में श्री शिव जी के लिए भी सिद्ध स्थान बन गया था।

अन्त:स्मितोल्लसित्तमिन्दु कला वतंसमिन्दीरोदर सहोदर
नेत्रशोभि ।
हेतुस्त्रालोकविभवस्य नवेन्दु मौलेरन्त: पुरदिशतुमङ्गल-
मादरादवन्न: ।।

श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (बैजनाथ) ज्योर्तिर्शिवलिंग:—

श्री शिव महापुराण के अष्ठम खण्ड के 14वें और 43वें, 46वें अध्याय की कथाओं और प्रत्यक्ष व अनुमान से भी यहाँ (उत्तर दिशा के) श्री चन्द्र भाल बैद्यनाथ (बैजनाथ) ज्योति-शिवलिंग की सिद्धि होती है ।

शिवपुराण में वर्णन है :—

(शिवपुराण भाषा पं० प्यारे लाल रुगगु, नवल दिशोर बुक डिपो लखनऊ (यू० पी०)

"चन्द्रभाल नामक श्री शिवलिंग को लंकापति राबण कैलाश पर्वत से लाया था और अपने नगर को ले जा रहा था । श्रीं शिव जी उसके साथ न जाकर गोकर्ण क्षेत्र में ही रह गए । उसी शिव-लिंग के साथ बैद्यनाथ भी आए जो चिता भूमि में स्थित हो गए ।

त्रेता युग में लंकापति रावण ने (हिमाचल के) कैलाश पर आकर घोर तप किया, जब श्री शिवजी प्रसन्न न हुए तब कुरहा में आकर हवन कुण्ड बनाया और स्तोत्रों, गायन व नृत्य द्वारा पूजन करके, तान्त्रिक ब्रतचर्या को अपनाते हुए अपने शीश काट-काट कर हवन कुण्ड में आहुति देने लगा (रा० च० मा० ल० का० दोहा 38 में रावण ने वाली पुत्र अंगद से कहा—

"शूर कवन रावण सरिस निज कर काटे शीश।
हुतै अनिल महं वार बहु हर्षित साखि गिरीश।।"

जब रावण अपने नौ शीश आहुति देने के पश्चात दसवं शीश की आहुति भी देने लगा तब देवता घबरा गए कि यदि रावण ने दसवें शीश की आहुति भी दे दी तो इसे रुद्र पदवी प्राप्त हो जाएगी और अजर, अमर तथा अजय हो जाएगा। इस पर श्री शिवजी ने प्रकट होकर रावण का हाथ पकड़ लिया और रावण के दस शीशों को पूर्ववत कर दिया और श्री वैद्यनाथ कहलाए। (द्विपास्यं त्वजास्यं, दशास्यं धरन्तं गणेशाय, दक्षाय, पौलस्त्यगात्रे) रावण ने प्रार्थना की -- हे प्रभो! मैं आपकी अपने नगर में स्थापना करना चाहता हूँ और अतुल्य बल प्राप्ति की याचना करता हूँ। शिवजी ने स्वीकार कर लिया परन्तु में रास्ते कहीं न रुकने की बात पक्की कर ली। यह सुनकर रावण चतुराई में आ कर बोला, हे प्रभो! आप अपने दो रुप धारण करलें। श्री शिव जी का चिन्ह (लिंग) दो रुपों (भागों) में विभाजित हो गया तदोपरान्त रावण दोनों (विभाजित चिन्हों अथवा लिंगों) को मञ्जूषा में रखकर अपने नगर (लंका) को चल पड़ा। जब रावण गोकर्ण क्षेत्र में (इसी पीठ पर) पहुंचा तो इसे बड़े जोर का लघु शंका उत्पन्न हुई। यहां झाड़-झंकाड़ युक्त क्षेत्र में बैजू नाम का गवाला पशु चरा रहा था। रावण ने एक घड़ी का वचन करके मञ्जूषा गवाले को पकड़ा दी और आप लघु शंका करने चला गया। जब दो घड़ी बीतने पर भी न आया तो गवाले ने मञ्जूषा भारी होने के कारण पृथ्वी पर रख दी और स्वयं अपने पशु चराने चला गया। श्री शिवजी के दोनों शिव चिन्ह (शिवलिंग)

वहां स्थापित हो गए और फिर विचलित न हुए। जो शिवलिंग मञ्जूषा की पीठ की तरफ था वह बैद्यनाथ (बैजनाथ) के नाम से और जो सामने की तरफ था वह श्री चन्द्रभाल के नाम से प्रसिद्ध होकर गोकर्ण क्षेत्र में स्थित हुआ। "माघ कृष्ण चर्तुदशी" (श्री तारा रात्री) को उस स्थान से चार-चार कोस की दूरी तक के हिंसक पशु वनों के भीतर भाग जाते हैं और ठण्डी वायु भी उस स्थान पर आकर धीरे हो जाती है, इस स्थान की यह विचित्रता प्रसिद्ध है। (बैजनाथ शिव मन्दिर में श्री तारा रात्री के नाम से माघ कृष्ण चर्तुदशी का यह पर्व प्राचीन काल से ही मनाया जाता है तथा रात जागरण और श्री क्षीर गंगा में स्नान का महात्म होता है। इस प्राचीन प्रथा से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह वही प्राचीन स्थान है, जिसका वर्णन कोटी रुद्र संहता (अष्टम खण्ड) में उत्तर दिशा के शिवलिंगों में आता है)

श्री बैद्यनाथ का बैजनाथ नाम कैसे प्रसिद्ध हुआ,—

श्री बैद्यनाथ का बैजनाथ नाम कैसे प्रसिद्ध हुआ इस सम्बन्ध में श्री शिव पुरान के अष्टम खण्ड अध्याय 43 से 45 में वर्णन है कि "श्री ब्रह्मा जी श्री नारद से कहते हैं—जब रावण श्री शिवजी के शिवलिंगों को छोड़कर और अतुल्य वर प्राप्त करके चला गया तब श्री शिवजी ने पार्वती सहित प्रकट होकर हम सब देवताओं पर कृपा की और उस स्थान पर एक अंश रुप से सदा विद्यमान रहना स्वीकार कर लिया तथा कहा कि जो कोई यहां गंगा जल लाकर चढ़ाएगा और पूजा करेगा वह संसार में प्रसन्न रहते हुए परम पद प्राप्त करेगा। इस चरित्र को बैजूनाम ग्वाला दूर से देख रहा था। सभी देवताओं के चले जाने के बाद तुरन्त यहां आ कर पूजा की। वह प्रतिदिन वहां जाकर पूजा किए बिना भोजन

G-1312
11.5.92

नहीं करता था। एक दिन बैजू के घर बड़ा भारी उत्सव था, वह भाई बन्धुओं की सेवा में लगा रहा। जब सब भोजन करने लगे तो इससे पूर्व कि बैजू ग्रास कण्ठ से उतारे उसको याद आ गई कि अभी तो श्री बैद्यनाथ की पूजा नहीं की है। वह तुरन्त उठकर चला गया और भाई बन्धुओं की नाराजगी अपने ऊपर ले ली। विद्वान बैजू ने श्री शिवलिंग की पूजा की और दण्डवत करके पृथ्वी पर गिरकर ध्यान किया तथा प्रेम की अधिकता से उठकर नाचने लगा। श्री शिव जी ने गिरिजा सहित प्रकट होकर वर मांगने को कहा इस पर बैजू ने कहा कि आपके चरणों में मेरा प्रेम सदा बना रहे और जो मेरा नाम है वही आपका नामहो। श्री शिवजी ने वरदान दिया कि ऐसा ही होगा और बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उपरोक्त वर्णन के अनुसार (1) श्री शिव पुराण के अष्टम खण्ड में उत्तर दिशा के शिवलिंगों का वर्णन चौहदवें अध्याय में आया है। इससे श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (जो बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए) की उत्तर की दिशा से भी सिद्धि हो जाती है। (2) श्री शिवलिंग के दो भागों में विभक्त होने की सिद्धि भी प्रत्यक्ष रुप से हो जाती है यहां भी शिवलिंग दो भागों में विभक्त है (3) गोकर्ण क्षेत्र के बारे में इसी पुस्तिका में गोकर्ण शक्ति पीठ, गोकर्ण शिव क्षेत्र और जालन्धर पीठ अन्तर्गत श्री तारा सिद्ध पीठ आदि प्रसंगों में शस्त्रों के प्रमाण दिये गए हैं। (4) माघ कृष्ण चर्तुदशी पर शिव मन्दिर में श्री ताराआत्री के नाम से प्राचीन प्रथा प्राचीन काल से ही चली आती है जिसका वर्णन शिव पुराण में आता है (5) मन्दिर में श्री शिवजी के ध्यानों (मूर्तियों) में इनके मस्तक पर चन्द्रमा विशेष रुप से दर्शाया गया है अथवा श्री चन्द्रभाल चन्द्रमौली शिवजी के ध्यान हैं (7) श्री सति जी ने अपने पिता

दक्ष प्रजापति के यज्ञ में योग अग्निद्वारा देह त्याग करते हुए भी चन्द्रमौली बृषकेतु का ध्यान किया था और हिमाचल के राजा हिमवान के घर पार्वती के रुप में अवतार लिया था। रा० च० मा० बाल काण्ड दोहा 75 से 76 तक में वर्णन है "तजहौं तुरत देह तेहि हेतु । उर धरि चन्द्रमौलि वृष केतू" ॥ "अस कही योग अग्नि तनु जारा । भयऊ सकल जग हा हाकारा" ॥ "ते ही कारण हिमगिरि गृह जाई । जन्मी पार्वति तनु पाई........(इत्यादि)" ॥ शिव पुराण के तृताय खण्ड के 29वें, 30वें अध्याय में श्री पार्वती जी का एक पहाड़ के शृंग पर जाकर तप करने से सम्बन्धित गोरजां दा रिढ़ा अथवा "गोरजां शिखिर" बैजनाथ के सामने वाली वर्फानी चोटी का नाम है। इसा वर्फानी पहाड़ की चोटी के नीचे एक पहाड़ी चोटी का नाम भगमच्छर (भगमाच्छुर) अथवा भसमासुर है। इस क्षेत्र का सम्बन्ध पुराण गाथाओं से स्पष्ट सिद्ध हो जाता है। (7) बैद्यनाथ और बैजनाथ के नाम से भारतवर्ष में स्थाल परगने में चित्ताभूमि बैद्यनाथ और निजाम हैदराबाद में परली नाम के स्थान के पास एक प्राचीन शिव मन्दिर को प्रलयं बैद्यनाथ माना जाता है तथा द्वादश ज्योर्तिलिंग स्तोत्र में श्री बैद्यनाथ जी को पूर्व उत्तर दिशा कही गई है। 'चित्ताभूमि' शब्द को लिया जाए तो-"इमा ब्रह्म विद्यां खंर्वा नीलधन प्रभांज्वलच्चिता मध्यगतां.........आदि"। श्रुति के अनुसार सिद्ध पीठ को चिता भूमि कहते हैं। इस प्रकार इस सिद्ध पीठ को चिता भूमि मानना युक्ति संगत होगा। शक्ति पीठ के प्रसंग में इन का वर्णन कर आए हैं। बैजनाथ मन्दिर की परिक्रमा में 150–200 वर्ष पूर्व श्मशान भी हुआ करता था, श्मशान के स्थान को भी चिताभूमि ही माना जाता है। परली, पारली या प्रलययं शब्द को लेकर बैजनाथ के निकट ही पपरोला और पल्ली (केश्वर) नाम के स्थानों को परली या प्रलयं आदि का अपभ्रंश माना जा सकता

है। परन्तु हम यहां शिव पुराण अष्टम खण्ड में जहां पश्चिम और उत्तर के शिवलिंगों का उल्लेख है उसके अनुसार यहां श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (विभाजित शिवलिंग) जिनका सम्बन्ध लंका पति रावण और गौकर्ण क्षेत्र से है, का वर्णन कर रहे हैं जिससे उत्तर दिशा की सिद्धि भी हो जाती है। (8) लंका पति रावण ने कैलाश पर ध्यान द्वारा और कुराह में हवन कुण्ड बनाकर हवन आदि द्वारा श्री शिवजी को प्रसन्न किया था और कुराह से (विभा-जित शिवलिंग को लेकर चला था। कुराह से मिलते जुलते नामों वाले क्षेत्र भद्रुआह, चुराह और *कुलाह (कुराह) आदि, बैजनाथ से काफी दूर उत्तर में विद्यमान हैं। लीला के अनुसार लंकापति रावण द्वारा दक्षिण से आकर उत्तर में श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ के शिवलिंग की स्थापना के पश्चात श्री राम जी द्वारा दक्षिण में श्री रामेश्वरम शिवलिंग की स्थापना का किया जाना भी एक दूसरे से सम्बन्ध रखता है यह दोनों स्थान 78° अक्षांश के आस पास स्थित हैं, जैसे तराजू के दो पलड़े हों (त्रेता युग में रामायण के सभी पात्र श्री शिव जी से सम्बन्धित हैं)।

यह अति साधारण सा लोक श्रेयी परिचय मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुमान द्वारा इन्हें शास्त्र सम्मत "उत्तर दिशा के श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ ज्योतिशिवलिंग जो बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए" प्रमाणित कर देता है। पाठक गण स्वयं इन सब

---

*कुलाह नाम का स्थान बैजनाथ के उत्तर में है, कुराह का अपभ्रंश ही कुलाह है। 'र' कई बार 'ल' में बदल जाया करता है। मणी महेश की यात्रा करते हुए कुल्हा में पड़ाव डाला जाता है। कुलाह मणी महेश कैलाश का द्वार है और मणी महेश तथा बैद्यनाथ (बैजनाथ) का आपसी एकरुपता सम्बन्ध है।

तथ्यों पर विचार कर सकते हैं। *This is where Ravna was Blessed by Shiva — Baijnath Temple* का बोर्ड यात्रियों का स्वागत कर रहा है। बैजनाथ में रावणेश्वरम नाम का स्थान (मन्दिर); मन्दिर के पूर्व में "चरण" और मन्दिर के साथ एक कुण्ड (बाड़ी) व सरोवर आदि भी रावण के यहा आने और तप करने से सम्बन्ध रखते हैं।

अन्तः स्मितोल्लसितमिन्दुकलावतंस-
-मिन्दीवरोदरसहोदरनेत्रशोभि।
हेतुस्त्रिलोकविभवस्य नवेन्दुमौले-
-रन्तः पुरं दिशतु मङ्गलमादरादवन्नः॥

"नवचन्द्रशेखर भगवान् सदा शिव के अन्तःपुर व अधिष्ठात्री भगवती, आप हम सब लोगों के लिए साद सुमङ्गल प्रदान करें।"

मन्दिर निर्माण

महाभारत और गर्गसंहिता आदि ग्रन्थों में 5000 वर्ष पूर्व त्रिगर्त पर अनेक वार आक्रमणों का उल्लेख आया है तत्पश्चात भी आक्रमणों का यह क्रम अठाहरवीं शताब्दी तक पहुँच जाता है इन आक्रमणों में यहाँ के प्राचीन इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थों को क्षति पहुँचती रही हैं। 1009 AD. में नगरकोट कांगड़ा से महमूद गजनवी अथाह धन भण्डार के अतिरिक्त कावुल के भारतीय सौंथियन राजकुमारों के वंश की नामावली भी लूटकर ले गया था। इसी प्रकार चौहदवीं शताब्दी से अठाहरवीं शताब्दीं तक के समय में मुसलमान बादशाहों ने कई बार इस क्षेत्र को जी भर कर उजाड़ा और लूट पाट की थी। त्रिगर्त के राजे और राजांके भी आपस में लड़ते भिड़ते रहते थे इन सब कारणों से यहाँ के नगर और ग्राम वार-वार उजड़ते और वसते रहे, परिणामस्वरुप यहाँ का क्रम वद्ध इतिहास सुरक्षित न रह पाया, बैजनाथ मन्दिर से सम्बन्धित प्राचीन इतिहास की खोई हुई कड़ियों को खोजने और जोड़ने का प्रयास इस लेख में किया गया है:—

कुछ कुमारियों के याद हैं, कुछ वुलवुलों के हिफज।
बिखरे हुए हैं टुकड़े, मेरी दस्तान के॥

धर्म ग्रन्थों के प्रमाणों के अनुसार प्राचीन काल में यहाँ गोकर्ण शक्ति पीठ की उत्पति हुई थी। जालन्धर असुर के वध के पश्चात जालन्धर पीठ अन्तर्गत इसी शक्ति पीठ पर आकर श्री शिवजी

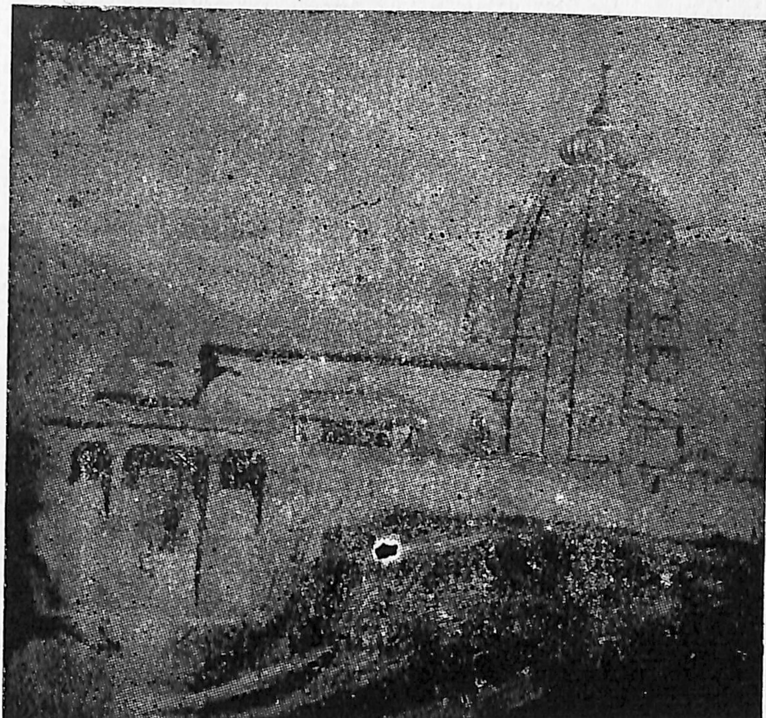

शिव मन्दिर, बैजनाथ [कांगड़ा] हि० प्र०

ने महोग्रा तारा दुर्गा की उपासना की थी और त्रेता युग में लंकापति रावण द्वारा ले जाए जा रहे श्री चन्द्रभाल बैजनाथ जी के शिव चिन्ह (लिंग) यहाँ स्थापित हो गए थे यह सब विवरण आप पहले पढ़ आए हैं। द्वापर युग में बैजनाथ (बीड़, संसाल) से सप्तधारा नदी (आवा) तक का यह क्षेत्र शिव क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता था। इस क्षेत्र के उत्तर में कुलूत राज्य था और पश्चिम में वाण गंगा (वनेर नदी) तक वारण वत्त राज्य और वाण गंगा से आगे पंजाब के मैदानों तक का क्षेत्र त्रिगर्त राज्य था। वारणा वत्त के राजा बड़े धर्मात्मा निश्पक्ष और वीर पुरुष थे। जन श्रुति है कि इन के राज्य में प्रजा पर कोई कर नहीं था एक बार राजा ने अपनी रानी की इच्छा पर कर लगाया था। तब कोड़ी की मुद्रा भी प्रचलित थी और नौ लाख कोड़ी एकत्रित हुई थी। वारणा वत्त के राजा का अपभ्रंश ही वाण वट राजा के नाम से याद किया जाता है। इनके राज-निवास बनेर और इकु नदियों के संगम पर बतलाए जाते हैं। कुलूत के राजा क्षेम धूर्ति और त्रिगर्त के राजा सुशर्म चन्द्र दोनों ही दुर्योधन के मित्र थे (महाभारत में दोनों ही दुर्योधन के साथी थे)।

प्राचीन काल से चली आ रही जन श्रुति के अनुसार मन्दिर निर्माण से पाण्डवों का नाम जुड़ा हुआ है। पाण्डवों के इस क्षेत्र में आने और दो साल के लगभग ठहरने के प्रमाण महाभारत के आदि पर्व में मिलते हैं। दुर्योधन और इसके मित्रों ने पाण्डवों को हस्तिनापुर से दूर किसी वन्य पहाड़ी क्षेत्र में मार डालने की योजना बनाई और इसके लिये कुलूत और त्रिगर्त के दोनों मित्र राज्यों के मध्य वारणा वत्त का क्षेत्र चुना गया जिससे शक की

गुंजाईश न रहे क्योंकि वारणा वत्त एक निश्पक्ष और धर्म प्रसिद्ध राज्य था। षड्यंत्र रचकर वारणा वत्त में लाखा से युक्त (जलनशील पदार्थों वाला) एक भवन पाण्डवों के ठहरने के लिये बनवाया गया और पाण्डवों को वहां भेजा गया था। वारणा वत्त में आकर पाण्डव दस दिन राजनिवासों में रहने के पश्चात, नगर के एक तरफ बनाए (लाखा) भवन में चले गए और वहां एक साल भर रहे थे। इस प्रकार एक साल की अवधि में पाण्डवों ने श्री विदुर जी के द्वारा भेजे गए विश्वासी सेवकों से भवन के अन्दर से ही दक्षिण दिशा की तरफ जाने वाली एक गुप्त सुरंग बनवा ली थी और आप (पाण्डव) आस पास के क्षेत्रों में भ्रमण करते रहते थे। जब लाखा भवन को आग लगाई गई तब पाण्डव पहले से बनाई गई गुप्त सुरंग द्वारा सुरक्षित बाहर निकल गए थे। ततपश्चात जंगल में भीमसेन ने हिडम्ब राक्षस को मारा और इसकी बहन हिडम्बा ने भीमसेन से व्याह कर लिया था। रात्री को भीमसेन अपनी माता और भाईयों के साथ रहते और दिन भर हिडम्बा के साथ जंगलों और पहाड़ों में क्रीड़ा करते रहते थे। इन दोनों की क्रीड़ा से सम्बन्धित पहाड़ों पर भीमसेन की घसूत (फिसलने की ढलान) आदि अनेक स्थान विद्यमान हैं। हिडम्बा से घटोत्कच नाम का पुत्र उत्पन्न होने पर हिडम्बा उत्तर दिशा में अपने निवास स्थान को चली गई थी (मनाली में हिडम्बा मन्दिर आज भी विख्यात है) इसके पश्चात पाण्डव एक चक्रा नगरी (चक्की पठानकोट) आदि से होते हुए पांचाल में द्रोपदी के स्वयंवर में शामिल हुए थे। इस विवरण के अनुसार पाण्डव वारणा वत्त और इसके साथ लगते क्षेत्रों में दो साल के लगभग घूमते रहे थे। नगरोटा वगवां के उत्तर में पठियार ग्राम में (बड़े विश्वास के साथ) एक स्थान को लाखा मण्डप बताया जाता है, कि यहाँ ही पाण्डवों को जलाने की योजना थी और डेढ़ सौ वर्ष

पूर्व तक जली हुई मिट्टी व खण्डहर इस स्थान की खुदाई पर निकला करते थे (अब खेत हैं ओर समीप ही ब्राह्मी लिपी का एक लेख भी है) इस स्थान का पानी अब भूमि के नीचे से होकर दक्षिण में दो-तीन किलोमीटर पर (नगरोटा रेलवे स्टेशन के पास) बम्वी नाम के स्थान पर बाहर निकलता है। जल के इस मार्ग को पाण्डवों की सुरंग बताया जाता है। इस प्रकार पाण्डवों के इस क्षेत्र में आगमन, दो साल के लगभग निवास ओर भ्रमण के प्रमाणों की प्रत्यक्ष में भी सिद्धि हो जाती है। पाण्डव वारणावत्त में प्रचुर धन लेकर आए थे। अतः इसी समय में पाण्डवों द्वारा यहां मन्दिर बनवाया गया था, उचित ही ठहरता है। (वनवास की अवधि में भी पाण्डवों का इस क्षेत्र में पुनः आगमन हुआ था)।

प्राचीन काल में यहां एक दुर्लभ नगर और तारा शिवालय का वर्णन जालन्धर पीठ महात्मय तथा नील तन्त्र आदि प्राचीन पुस्तकों में भी आया हैं। इसकी प्रामाणिकता के लिये इन दोनों ग्रन्थों से दो श्लोक भी उद्धृत किये जा रहे हैं। इन श्लोकों का सम्बन्ध जालन्धर पीठ अन्तर्गत श्री शक्ति (तारा सिद्ध) पीठ से है। जालन्धर पीठ महात्मय में क्रमानुसार यात्रा का वर्णन करते हुए जब बैद्यननाथ (इस स्थान) का वर्णन आता है वहां साथ ही श्री तारिणी (तारा) की शक्ति पीठ और तारा शिवालय का भी वर्णन है।

"वैद्यनाथस्य पूर्वेहि किय द्दूरे च पादपः।
अश्वत्थोऽस्ति तदन्ते च तारिणी मुक्तिदायिनी।।" तथा
"ऐशान्यां चक्रनाथस्य बैद्यनाथस्य पूर्वतः।
तारापुर मितिख्यातं नगरं भुवि दुर्लभम्।।
तत्र यत्नेन गंतव्यं यत्र तारा शिवालयम्।
लक्षव्रत जपाद्देवि ! सर्वसिद्धिश्वरो भवेत।।

इन श्लोकों से भी यहां श्री तारा शिवालय और दुर्लभ नगर का होना सिद्ध हो जाता है। प्रश्न उठता है कि उस प्राचीन दुर्लभ नगर और तारा शिवालय का क्या हुआ? इस सम्बन्ध में विचार करने पर प्राकृतिक प्रकोप भी एक बड़ा कारण हो सकता है। सामने के पहाड़ों और पहाड़ियों के भूखण्डों के टूटने के निशान स्पष्ट नजर आते हैं। यहां के लोग (चली आ रही जन श्रुतियों के अनुसार) बडे विश्वास के साथ कहते हैं कि इस समय मन्दिर के पश्चिम में प्रवाहित बिनवा नदी प्राचीन काल में मन्दिर के पूर्व में थी। इस बात के स्पष्ट प्रमाण अभी भी मिल जाते हैं। त्रिभुज अथवा धनुषाकार शक्ति पीठ के मध्य सीधी वाण के तुल्य प्रवाहित होने से जालन्धर पीठ महात्म में इसका वाण गंगा नाम आया है। बैजनाथ से महांकाल चौबू तक की चट्टानें (बड़े-बड़े पत्थर) इसका स्पष्ट प्रमाण है। इस नदी ने अपना मार्ग भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों के कारण ही बदला होगा और इस समय तक जो काफी गहरी सीधी घाटी बना दी है इसे बनने में 3000 वर्ष के लगभग समय लग गया होगा। महाभारत काल के मन्दिर और नगर आदि लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व किसी भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से मलिया मेट हो गए थे। चीनी तुर्किस्तान से हस्तिनापुर अन्तर राष्ट्रीय मार्ग पर एक उपयुक्त स्थल होने के कारण और अपनी धार्मिक महिमा से यह प्राचीन स्थान पुन: आबाद हो गया था। विख्यात इतिहासकार श्री राहुल जी ने प्रमाणित किया हैं कि प्राचीन काल में अन्तरराष्ट्रीय मार्ग पर यहां काफिलों का बहुत बड़ा पड़ाओ और नगर था जिसमें कई एक भव्य मन्दिर थे। नगर के ऐशान में सेना की छावनी थी जिसे अब गणखेतर ग्राम से जाना जाता है जो गण क्षेत्र शब्द का अपभ्रंश है। कांगड़ा घाटी में 2000/2500 वर्ष पूर्व के मन्दिरों

में से देवी शंकर नाम के एक मन्दिर का उल्लेख **History of the Punjab Hill States Vol-I** (1982) **P.** 137 पर आया है जिसे शेरशाह सूरी की सेना द्वारा 1540 **A. D.** में तोड़ा गया था। इस मन्दिर में तांबे का एक भारी छत्र था जिस पर 2000 वर्ष पूर्व का तिथि सहित लेख था इससे पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि इस प्राचीन धर्म स्थान पर भी 2000 वर्ष पूर्व प्राचीन मन्दिर विद्यमान रहा होगा। बैजनाथ मन्दिर के गर्भ गृह के पास श्री गंगा और यमुना की प्राचीन मूर्तियां 1500 या 2000 वर्ष के लगभग पुरानी लगती हैं तथा मन्दिर के शिलालेखों में किए गए वर्णन के अनुसार 1200 वर्ष पूर्व (साका 726) में भी यहां पर प्राचीन शिवलिंग विद्यमान था। इस प्रकार प्रत्यक्ष और अनुमान से यह स्पष्ट हो जाता है कि 2000 वर्ष पूर्व में भी अवश्य ही यहां मन्दिर मौजूद था जो कि सातवीं शताब्दी तक धराशायी हो चुका था। और आठवीं शताब्दी में केवल श्री शिव लिंग ही विद्यमान था, जिसका उल्लेख मन्दिर के शिलालेखों में किया गया है। तीसरी से छटी शताब्दी के समय में मध्य एशिया की हूण, शक आदि बरबर जातियों ने कई एक आक्रमण किए थे और उत्तर पश्चिम भारत को अपने अधिकार में ले लिया था। इनमें से सम्राट कनिष्क के राज्य में त्रिगंत कश्मीर आदि सभी क्षेत्र शामिल थे। सम्राट कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म को बढ़ावा मिला था। बैजनाथ मन्दिर में (और आस पास भूमि में दबी मिली) महात्मा बुद्ध देव जी की व अन्य कुछ एक खण्डित मूर्तियों की बनावट (शैली) कुशान काल से प्रभावित है। कीर, काश्मीर और भौट आदि अन्य जातियों ने भी त्रिगंत पर अधिकार कर लिया था और कीरों के नाम से यह क्षेत्र कीर प्रदेश कहलाया था। नेपाल और काश्मीर के मध्य कीर प्रदेश का

वर्णन राज-तरंगिणी और ज्योतिष की प्राचीन पुस्तकों में भी आता है। बैजनाथ मन्दिर के शिलालेखों में इस स्थान का नाम कीरग्राम आया है। सम्भवत: कीरों ने इसे अपनी वस्ती (मुख्य नगर) बना लिया था और इस प्रकार इनके पश्चात वस्ती या नगर उजड़ने पर यह स्थान कीर ग्राम के नाम से जाना जाता था। छटी शताब्दी तक के इन चार-पाँच सौ वर्षों की अवधि में यहां के कटोच वंशीय क्षत्रिय और राणे (राजाँके) इन आक्रमण-कारियों से सदा युद्धरत रहे और यह सारे क्षेत्र इस मार-काट के समय में उजड़ते रहे। इस लम्बी लूटपाट में बैजनाथ का 2000 वर्ष पूर्व (पाण्डवों के पश्चात) पुन बनाया गया। मन्दिर भी क्षतिग्रस्त होकर सातवी शताब्दी तक धराशायी हो चुका था। सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष के सम्राट हर्षबर्धन शिलादित्य, ने विदेशी आक्रमणकारियों को खदेड़ डाला था और इन्हें खदेड़ते हुए जो क्षत्रिय सैनिक यहाँ के राजाओं की सहायता के लिए मैदानी इलाकों से आए थे, इनमें से कई एक यहां ही बस गए थे। सातवीं शताब्दी में यहां के कटोच वंशीय महाराजे और राणे पुन: प्रभुत्व में आ गए और तत्पश्चात उजड़ चुके ग्रामों व नगरों को बसाया गया और क्षतिग्रस्त व नष्ट हो चुके मन्दिरों व राज-प्रसादों आदि के जीर्णोद्धार व पुन: निर्माण कराए गए थे। सातवीं शताब्दी में बैजनाथ (तब कीरग्राम नाम था) का सर्व सुविधा सम्पन्न क्षेत्र, वीर राजाँका कन्द के संरक्षण में था जिन की आठ पीढ़ियों का बड़ा सुन्दर वर्णन मन्दिर के शिलालेखों में किया गया है। शि० ले० **II** श्लोक 11 का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार है : *"There lived in the begining Rajanka Kanda, The route* **(Kand)** *of a peerless race*

that resembles a Bakula tree, he was a destrsyer of his foes, a conquerar of towns, an untamable, SKANDA". राजांका कन्द के पुत्र बुद्ध, बुद्ध के विग्रह, विग्रह के ब्रह्मा, ब्रह्मा के डोम्वक, डोम्वक के भुवन, भुवन के कल्हण और कल्हण के पुत्र राजांका विहण हुए। इन सब के बारे में बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है, यहाँ विहण से सम्बन्धित अंग्रेजी अनुवाद दिया जा रहा है (शेष के इस प्रसंग के अन्त में देखें) शिलालेख **II** श्लोक 17–18 "*As his good and obedient son was born, he who was called* **Bihana**, *who showed guileless devotion to the lotus feet of the supreme lord of Jalandhra, who possessed great power of mind and was terrible on a account of his strength." With* **Lakashanik** , *the daughter of* **Hridaya Chandra,** *the politic King of* **Trigarta**, *he had two sons named* **Rama** *and* **Lakshmana**". राजाँका विहण की शादी त्रिगर्त नरेश हृदय चन्द्र जी की सुपुत्री लकशानिका से हुई थीं जिससे राम और लक्ष्मण दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र के स्वर्गवास हो जाने पर श्री लक्ष्मण चन्द्र यहां के राजांका हुए। (राजांका लक्ष्मण चन्द्र के समय जालन्धर व त्रिगर्त नरेश श्री जय चन्द्र जी थे।) शि० ले० **II** श्लोक 10 "*There is in* **Trigarta** *the pleasant village of* **Kira-Grama**, *the home of numerous virtues, where that river called* **Kanduk Binduk,** *leaping from the lap of mountain, with glittering broad waves sportlvely plays, Thus resembling a bright maiden in the*

first bloom of youth (who jumping from the lap of her nurse gracefully sports). That (village) is protected by the strong armed **Rajanka Lakshman**." और अगले श्लोकों 20 22 का अनुवाद इस प्रकार है :—*The whole territory which* **Kanda** *possessed and the other servants of the lotus feet of the king of* **Trigarta**, *the destroyers of the foes of* **Assand,** *belongs at present to holy* **Lakshman**, *who protects the inhabitents and whose pure actions are worthy of praise" "While that* **Lakshman Chandra**, *whose dear wife was* **Mayatalla** *a lady of peerless beauty, protects* **Kiragram**." आठवीं शताब्दी में भी पिछली शताब्दियों से चली आ रही लूटपाट, उथल-पुथल, भाग दौड़ और स्त्रियों के अपहरण आदि के प्रभाव का पता प्रथम शिलालेख के श्लोक 24,26 और 30 से लगता है। धर्मात्मा और वीर राजांक लक्ष्मण चन्द्र के समय पवित्र आत्मा मन्युक और आहुक दो व्यापारी भाईयों के मन में श्री शिव जी की भक्ति का उदय हुआ। इन्होंने यहां (निराश्रय) श्री बैद्यनाथ जी के शिवलिंग को देखा और मण्डप सहित ऊँचा मन्दिर बनवाया। राजांक लक्ष्मण चन्द्र ने राजकोष से छः द्राम प्रतिदिन और भूमि आदि मन्दिर के नाम लगाए। दोनों बनियां भाईयों ने चार हल की भूमि, तेल निकालने का कारखाना और एक दुकान मन्दिर के नाम लगवाए। इसी प्रकार मन्युक और आहुक के वंशजों, अन्य दानियों, शिल्पियों और कविता लिखने वाले कवि आदि का व्योरा इन शिलालेखों में दिया गया है। इन शिलालेखों में दिया समय 726 साका अथवा 804 **A.D.** माना जाता है। 804 **A.D.** में यहां श्री शिवलिंग

का होना स्पष्ट प्रमाणित करता है कि इससे पूर्व यहां मन्दिर था और उस मन्दिर को 2000 वर्ष पूर्व का माना जा सकता है, जो कि सातवीं शताब्दी तक की उथल पुथल में क्षति ग्रस्त होकर धराशायी हो चुका था (जैसा कि इस प्रसंग में लिख आए हैं)। आठवीं से दसवीं शताब्दी तक सिन्ध प्रान्त और पश्चिमी तट के अतिरिक्त भारतवर्ष पर कोई बड़ा आक्रमण नहीं हुआ था। इस अवधि में अनेक राज प्रसादों व मन्दिरों आदि के निर्माण हुए और 804 **A.D.** में यहां भी मन्दिर बना था। इन 300 वर्षों में मन्दिरों में अथाह धन सम्पति एकत्रित हो गई थी, जिस की ख्याति सुनकर ही मन्दिरों के विनाशक महमूद गजनवी ने लाखों लुटेरों के साथ ग्यारहवीं शताब्दी में भारतवर्ष के मन्दिरों को बार-बार लूटा और तोड़ा था। 1009 **A. D.** में कांगड़ा पर आक्रमण किया गया और यहां से अथाह धन राशी ऊँटों, छकड़ों और घोड़ों आदि पर लाद कर गजनी ले जाई गई। महमूद के लुटेरे 1043 **A.D.** तक सारे कांगड़ा को रोंदते रहे, इन 35 सालों में लूटपाट और मारकाट चलती रही। कटोच वंशीय राजे और राणे इन आक्रमणकारियों से सदा लड़ते भिड़ते रहे इस अवधि में सारा कांगड़ा उजड़ गया था। जनश्रुति है कि महमूद की सेना ने बैजनाथ से 5 किलोमीटर पर वनियों के पट (अब अव्हलाल मिलट्री कैम्प) में अपनी छावनी डाल कर बैजनाथ पर आक्रमण किया परन्तु श्री शिवजी के चमत्कार से यहाँ के वीर राजा और राणा की छोटी सी सेना ने ही इन्हें परास्त कर दिया था। मन्दिर के शिलालेखों के अनुसार कीरग्राम (बैजनाथ) के राजांक (राणा) त्रिगत नरेश के भानजे थे, 35 वर्षो तक महमूद के लुटेरों से लड़ाई में महाराजा नगरकोट कांगड़ा का साथ देने और बैजनाथ के स्थान व मन्दिर की प्रसिद्धी भी इस आक्रमण के कारण रहे होंगे। इस आक्रमण और लड़ाई में यहां के राजनिवास

उजड़ गए और मन्दिर भी क्षतिग्रस्त हो गया था तब उत्तर दिशा के जंगलों, पहाड़ों तथा बैजनाथ के नजदीक लंघू और सकड़ी ग्रामों में निवास बनाए गए। लंघू ग्राम में एक टीले पर राणा व सकड़ी ग्राम में कटोच राजा के राज निवासों के खण्डहर पाए जाते हैं तथा इन राणाओं को कटोचों के भानजे बताया जाता है। 1043 *A.D.* में कांगड़ा के राजा और राणा पुन: प्रभुत्व में आ गए और बारहवीं शताब्दी में (जैसा कि बताया जाता है) सकड़ी के राजा ने बैजनाथ मन्दिर की क्षतिपूर्ति की थी और एक जनश्रुनि के अनुसार प्रतिदिन मन्दिर में आरती के समय भोग (प्रशाद) सकड़ी के राजा भेजा करते थे। 1239 *A.D*. में समर्पित की गई जैन भगवान श्री महवीर जी की एक मूर्ति मन्दिर में मौजूद है। विश्व विख्यात अंग्रेज इन्जीनियर जैमज फरगूसन ने ऊपर लिखे विवरण के इसी आधार पर इस मन्दिर की क्षतिपर्ति को 800 वर्ष पुराना माना था। 1043 *A.D.* के पश्चात तेरहवीं शताब्दो तक भारतवर्ष और कांगड़ा पर कोई बड़ा आक्रमण नहीं हुआ था जिसके कारण इन 200 वर्षों में भी कई एक निर्माण कार्य सम्पन्न हुए थे। चौहदवीं शताब्दी में मुसलमान वादशाहों ने कांगड़ा पर अपने आक्रमण शुरु कर दिए थे यह आक्रमण अठारवीं शताब्दी तक चलते रहे। 1337-1351 *A.D.* में फिरोजशाह तुगलक ने कांगड़ा के मन्दिर को तोड़ डाला था। 1540 *A.D.* में शेरशाह सूरी की सेना ने 2500 वर्ष पुराने देवी शंकर के मन्दिर को तोड़ डाला था। 1572 *A.D.* में हुस्सैन कुल्ली खान ने भी कांगड़ा मन्दिर को पुन: तोड़ डाला और बड़े अत्याचार किये थे (**History of Punjab Hill States 1982 Pages** 129, 137, 142–43)। इन आक्रमणों में बैजनाथ के मन्दिरों को भी क्षति पहुंची थी अत: बैजनाथ शिव मन्दिर की परिक्रमा के साथ मोर्चेबन्द चारदोवारी और बैजनाथ ग्राम की आबादी की

सुरक्षा के लिए 6 फुट चौड़ी और काफी ऊंची पत्थरों की दीवार बनाई गई थी (इन के कुछ एक भाग अभी मौजूद हैं)। 1783–86A.D में महाराजा श्री संसार चन्द्र जी (द्वितीय) ने मन्दिर की गिरी हुई वेदी आदि की मुरम्मत करवाई और गर्भ गृह द्वार के द्वार पट ल्याण के हाकम जी ने लगवाए थे। इन द्वार पटों पर लिखा है–"श्रावण प्र० १ स० १८४० सिलाणे दे हाकमा हथे!" इसके 120 वर्ष पश्चात अथवा 1905 A.D. में कांगड़ा के विनाशकारी भूकम्प ने एक बार पुनः इस मन्दिर को झंझोड़ डाला था। प्राचीन काल में ही मन्दिर के शिलापटों को (अन्दर से ही) ताम्बे के कुण्डों द्वारा एक दूसरे से जोड़ा गया था और शिखर पर बहुत भारी कलश (गरुड़) रखा हुआ है। अपनी इसी सुदृढ़ता के कारण यह प्राचीन मन्दिर धराशायी होने से तो बच गया परन्तु सभा मण्डप की दीवारों के चारों कोनों में (बाहर की ओर) बनाए गए छोटे मन्दिरों को भारी क्षति पहुंची थी और दीवारों से बहुत सारे पत्थर निकल गए थे। सभा मण्डप की छत के भारी शिलापटों में गहरी दरारें पड़ गई थीं जिन्हें पुरातत्व विभाग ने लोहे के स्तम्भों का सहारा देकर थामा है। 1905 के पश्चात भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा की गई मुरम्मत में सभी पत्थर साफ सपाट ही लगाए गए हैं। इनके बीचों बीच कहीं कहीं पुराने बचे हुए पत्थरों को भी लगा दिया गया है। सभा मण्डप की बाहरी दीवार में श्री अर्धनारीश्वर और हरिहर जी की मूर्तियों के चोखटों (ताकचों) में इन्हे देखा जा सकता है। इन पर नृत्यकला को दर्शाने वाली बड़ी सुन्दर छोटी–छोटी मूर्तियाँ मौजूद हैं जो कि सैंकड़ों वर्षों के जल और वायु के आघातों से घिसती चली आ रही हैं। ध्वस्त हो चुके मन्दिरों के शिलाखण्ड मन्दिर की चार दीवारी के अन्दर, बाहर और भूमि

में भी दबे पड़े हैं। इन प्राचीन मन्दिरों की बची हुई पुरानी मूर्तियां मन्दिर की चार दीवारी की चिनाई में सुरक्षित कर दी गई हैं, कुछ पुरातत्व विभाग के संरक्षण में भण्डार के अन्दर रखी हुई हैं। मन्दिर के स्तम्भों और वृषभ की पीठ पर भी कुछ लेख हैं जिनमें 14, 501, 503 आदि अंक भी पढ़े जाते हैं। राजांका लक्ष्मण चन्द्र (804 *A.D.*) के वंशजों के बारे में पूर्णरुप से कुछ कह पाना मुश्किल है। बैजनाथ के पास पल्हूण ग्राम के राणों की नौरी ग्राम में (मन्दिर की भूमि के समीप ही) भूमि मौजूद है, इनके पूर्वज मन्दिर में प्रकाश आदि सेवा की व्यवस्था करते रहे हैं और चरणामतो कुहल का निर्माण भो कराया था। एक अन्य परिवार के राणे अपने बच्चों के बाल (जटु) यहां मन्दिर में आ कर चढ़ाया करते थे (इसके लिए राजाँका कन्द 'सातवीं शताब्दी से लेकर खोज करनी पड़ेगो)। एक जनश्रुति के अनुसार बैजनाथ और सगूर ग्रामों के राणे लड़ाईयों में मारे गए थे, यह लड़ाई सगूर ग्राम में चोहटा स्थान पर हुई थी। एक दूसरी कहावत है "चुनग दलोटू, खूड़ी थाना, वाई टीके (टिके), किल्हा राणा।" बैजनाथ के वाईस टीके थे और सामने पहाड़ की चोटी का नाम चुनग है। इसके साथ दलोटू नाम की चट्टानों के पास पुराने खण्डहर थे और द्रोहला नाम की चट्टान के जल स्त्रोत से नाली खोदकर पानी लाया गया था। ऐसे ही और भो कई एक स्थान हैं जो कि शोध कार्य में लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

इस प्रकार हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि पाण्डवों के समय का मन्दिर 2500-3000 वर्ष पूर्व किसी भयंकर, प्राकृतिक प्रकोप से मलियामेट हो गया था, इसके पश्चात् 2000 वर्ष पूर्व में जो मन्दिर बनाया गया या मौजूद था वह मध्य एशिया और

दूसरी जातियों के आक्रमणों से सातवीं शताब्दी तक ध्वस्त हो चुका था। शिलालेख के अनुसार 726 साका (804 *A.D.*) में यहां (ध्वस्त हो चुके मन्दिर के कारण) निरालय प्राचीन शिवलिंग ही बचा हुआ था, जिसके लिए 1200 वर्ष पूर्व यहां पुनः मन्दिर निर्माण हुआ था। इस मन्दिर को भी 1009-43 **A.D.** में महमूद गजनवी की सेना ने क्षति पहुंचाई थी जिसकी मुरम्मत सकड़ी के राजा ने 12वीं शताब्दी में करवाई और तत्पश्चात 15वीं से 17वीं शताब्दी में मुसलमान बादशाहों के समय में पहुंची क्षति की मुरम्मत महाराजा संसार चन्द्र जी (द्वितीय) ने 1784-86 **A.D.** में कराई थी। 1905 **A.D.** में भूकम्प द्वारा पहुँची क्षति की मुरम्मत भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने कराई है। कई लोग इस मुरम्मत को सातवीं वार कराई गई मुरम्मत बतलाते हैं।

"जमाने का दसतूर है यह पुराना,
बना कर मिटाना मिटा कर बनाना।"

वर्तमान मन्दिर की प्राचीन वास्तु कला की भव्यता को देख कर यह अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है कि आठवीं शताब्दी के लगभग इस मन्दिर का जब पुनः निर्माण कराया गया था, यह समय त्रिगर्त के कटोच क्षत्रिय वंशीय महाराजाओं का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। इस समय के महाराजा कला प्रेमी थे, अतः इनके राज्य में अनेक विद्याओं के विद्वान, कलाकार और शिल्पी समादृत थे। कला के प्रति इसी आदर भावना का प्रतीक यह मन्दिर कहा जा सकता है जो कला परम्परा बाद में कांगड़ा स्कूल आँफ पेंटिग के रुप में दिखाई पड़ती है जिसका विश्व में अपना स्थान रहा। ऐसी वास्तुकला के शिल्पी शायद ही आज यहां मिल सकें।

शिलालेखों का समय और महत्व :-

दोनों शिलालेखों के तीन अंको वाले साका सम्वत के समय को लेकर कुछ कठिनाई उपस्थित हो जाती है [क्योंकि प्रत्येक शि० ले० में दो, दो अंक खण्डित (×) हैं] फिर भी इन्हें 1200 वर्ष पूर्व का ही आँका गया है। दूसरे शिलालेख में साका सम्वत का पहला अंक 7×× है और पहले शिलालेख का तीसरा अंक ××6 है। तीन अंको वाले साका सम्वत में बीच वाला अंक सरअलग जैण्डर कनिंघम के अनुसार 2 हो सकता है। इस प्रकार इसे साका सम्वत 726 (804 AD) माना गया है। प्रथम शिलालेख में साका ××6 के साथ ही एक दूसरा वर्णन इस प्रकार है- "सम्वतसर सितितम प्रसिद्ध ज्येष्ठ शुक्ला प्राति तथात्र श्री मद जय चन्द्र नरेन्द्र राज्य रवि दिन राम कृता प्रशशति।' सम्वत 80 ज्येष्ठ शुक्ला प्रथम रविवार का भी वर्णन है। शारदा लिपि के लेख कश्मीर राज्य के विद्वान प्रमात्री भृंगक के पुत्र राम ने लिखे थे। शारदा कश्मीर राज्य की सरकारी लिपि थी और इस में सप्त ऋषि सम्वत प्रचलित था। सप्तऋषि एक नक्षत्र में 100 वर्ष निवास करते हैं और 27 नक्षत्रों में 2700 वर्ष का चक्र पूरा हो जाने से सप्त ऋषि सम्वत पुनः एक से आरम्भ होता है और प्रत्येक नक्षत्र के 100 वर्षो के पश्चात अगले नक्षत्र में भी पुनः एक से सौ (100) तक की गिनती (नक्षत्र चक्र की गणना) भी साथ-साथ ही चलते हैं (महाभारत युद्ध के समय सप्तऋषि मघा

नक्षत्र में थे।) इस दृष्टि से गणना करने पर सप्तऋषि सम्वत 80 के अंक का मेल साका 26 के अंकसे बैठ जाता है। इसके अनुसार ही सरकानिघम ने 726 साका निश्चित किया है। यह बात तो निश्चित ही है कि यह समय 706से 796 साका के मध्य का ही है और 726 साका युक्ति-युक्त माना जा सकता है।

इन शिलालेखों से यह भी स्पष्ट हो जाता है की आठवीं और तत्पश्चात नौवीं शताब्दी में भी कांगड़ा त्रिगर्त के नाम से ही जाना जाता था तथा बैजनाथ को *कीरग्राम और नदी को कन्दुक बिन्दुक के नामों से जाना जाता था। शिलालेखों में यहां के राजाकों की वंशावलि, जालन्धर व त्रिगर्त नरेश हृदय चन्द्र जी, उनकी लड़की लक्षानिका और महा राजा श्री जय चन्द्र जी तथा मन्दिर व शिलालेखों से सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों के साथ ही उस समय के राजाओं, व्यापारियों और प्रजा का भी बड़ा स्पष्ट वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक दृष्टि से ये दोनों शिलालेख बड़े महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

---

*कीरग्राम शब्द को लेकर कई एक कल्पनाएं की जाती हैं (1) जालन्धर असुर वध के समय बैजनाथ से 5 कि० मीटर उत्तर में असुर का मुकुट गिरा था वहां मुकुट नाथ, यहां हाथ गिरने से "कर ग्राम" अथवा कीरग्राम और जहां कान गिरा वहां कानगढ़ अथवा कांगड़ा नाम प्रसिद्ध हुए (2) यहां तोते बहुत हुआ करते थे संस्कृत में तोते को कीर कहा जाता है। (3) रावण ने कुरहा में हवन किया था, इस स्थान का नाम कुरहा से किराह और बाद में कीरा हो गया होगा (4, कीर जाति के निवास से कीर ग्राम नाम पड़ा (5) कीर प्रदेश का मुख्य नगर रहा होगा इत्यादि।

संस्कृत भाषा और शारदा लिपि के दोनों शिलालेख काले रंग के कठोर 'कसोटी' पत्थर पर बड़ी सुन्दरता से उत्कीर्ण किये गए हैं विश्व विख्यात विद्वान 'सर अलग ज़ैण्डर कनिघंम' डायरैक्टर जनरल पुरातत्व विभाग ने 1846 **A.D.** में इन शिलालेखों पर ध्यान दिया था और 1849 **A.D.** में पुन: आकर इनकी नकलें उतारीं। 1892 **A.D.** में डॉ०ऐम०ए० स्टीन, प्रिंसिपल ऑरियैन्टल कॉलेज लाहौर ने इन शिलालेखों और मन्दिर पर खोज की थी। इनकी खोज थी कि शिलालेखों में वर्णित नव ग्राम अब नौर अथवा नौरी ग्राम हैं, और सुसरमपुर आजकल का कांगड़ा (भौण) है। रांजाका लक्षमण का कस्टम हाऊस आज कल का घट्टा नाम का स्थान है तथा इनके राज्य में काफी बड़ा क्षेत्र था और राजांका लक्षमण के राज निवास वर्तमान डाक बगंला के टीले पर थे इत्यादि। डॉ० ब्हूलर ने इन शिलालेखों का अग्रेंजी में अनुवाद कराया था परन्तु डॉ० कील होरन ने कुछ एक श्लोकों के अनुवाद पर इनसे सहमत न होकर अपना अलग अनुवाद किया। देखें–

(Indian Antiquary Vol XX-Page 114-115)

शिलालेख-1

ॐ नमः साम्ब शिवाय

प्रथम शिलालेख में 39 श्लोक है, जिनमें से 1 से 19 के श्लोकों में श्री गौरी और ईश्वर (शिव) की स्तुति है, प्रत्येक श्लोक दोनों के लिये लगता है। 20वें श्लोक में श्री चन्द्रभाल शिवजी से शिलालेख लिखने के लिये प्रार्थना की गई है। 21 से 26

तक के श्लोकों में राजांका लक्षमण चन्द्र की शिव-भक्ति, केदार यात्रा और दूसरे की स्त्रियों को बहन तुल्य मानने की शपथ लेने के साथ इनकी सद्‌चरित्रता और वीरता का गुणगान करते हुए, अन्य अधर्मी राजाओं की तुलना में इनकी श्रेष्ठता का वणन किया गया है। श्लोक 27 से 29 में इनके (राजाँका लक्षमण चन्द्र) राज्य में रहने वाले प्रसिद्ध व्यापारी सिद्धा, इसकी पत्नी छिन्ना और इनके दो पुत्रों मन्युक और आहुक व आहुक की पत्नी गुल्हा का वर्णन है। इन सब की महेश (शिव) भक्ति और मन्दिर व मण्डप (जिसके द्वार पर श्री गंगा और यमुना की मूर्तियां हैं) के बनाने का उल्लेख करते हुए, 30वें श्लोक में इनकी तुलना दूसरे कंजूसव्यापारियों से की गई है जो अपने धन को छुपाए रखते हैं, या साथ लेकर दूसरे राज्यों में भाग जाते हैं। मन्युक द्वारा (शिव श्री कण्ठ जी के) मन्दिर बनाने में धन के सदुपयोग की सराहना की गई है। श्लोक 31-32 में सुसर्मपुरा (आधुनिक कांगड़ा) के ब्राह्मण आसुका के पुत्र ज्योतिष आचार्य रहलण का गुणगान है। जिसने श्री शिवजी के नाम दो द्रोण की भूमि नव ग्राम में दी, जबकि उस के पास एक वाहा भर भूमि है। श्लोक 33 में कीरग्राम (यहाँ) के ब्राह्मण गोविन्दा के बुद्धिमान पुत्र का वर्णन है जिसने नव ग्राम में आधे हल की भूमि श्री शिवजी के नाम पर दी। श्लोक 34 में बड़े धनवान व्यापारी जीवका दीपका और मल्हिका का वर्णन है, इन्होंने मन्दिर के आंगन के लिये भूमि दी। श्लोक 35 में मन्युक और आहुक व दूसरे सभी दानियों के लिये शुभकामना की गई हैं, जब तक यह भूमि और मन्दिर विद्यमान रहेंगे इन सब को स्वर्ग के सुख प्राप्त होंगे। श्लोक 36-37 में शिल्पियों (मिस्त्रियों) का मुखिया आसिका का महा बुद्धिमान पुत्र नयाका सुसर्मपुर नगर से इस ग्राम को आया जैसे कि समाना का पुत्र थोढूका भी। इन दोनों ने सामू के विचारानुसार इस उँचे मन्दिर और साथ हो

मण्डप की रुप रेखा, छैनी (**Chisel**) के साथ बनाई जिसमें गणों की मूर्तियाँ दर्शाइ गई हैं। श्लोक 38 में शृंगारा और भृंगका के वंश में, कवि शिरोमणि रामा ने यह श्लोक बनाए। श्लोक 39 जयचन्द्रनरेश के समय सम्वत अस्सी, ज्येष्ठ, शुक्ल प्रथम तिथि रविवार को राम (कवि) ने यह शिलालेख बनाया। ॐ नमः शिवाय साका सम्वत × × 6 (दो अंक खण्डित हैं)।

शिलालेख-2

द्वितीय शिलालेख में 37 श्लोक हैं ॐ नमः शिवाय के पश्चात श्लोक 1 से 4 तक श्री गजानन (गणेश) जी, तारक के शत्रु श्री शिवजी, श्री नन्दी, वीरभद्र आदि शिवगणों और शिव जी की अष्टमूर्ति आदि की स्तुति करते हुए मंगलकामनाएं की गई हैं। श० 5 यह मन्दिर स्वयं बताने (बोलने) में असमर्थ है कि किसने इसे बनाया था, फिर भी शिलालेख द्वारा वह बोल सकता है। श० 6 श्री शिवजी का यह मन्दिर, सद्गुणों के भण्डार (**Victorous**) जालन्धर नरेश श्री जयचन्द्र जी के राज्यकाल में बनाया गया है। श० 7 से 9 तक में मन्युक और आहुक धर्मबुद्धि श्री शिवजी में श्रद्धा और विश्वास रखने वाले, दोनों सगे भाईयों द्वारा यह मन्दिर बनवाया गया है। (इस पवित्र कार्य के लिये इनका गुणगान किया गया है) श० 10 त्रिगर्त में सर्व सुविधाओं और सद्गुणों के घर, रमणीय स्थान कीरग्राम, जहां पहाड़ों की गोद में से नव यौवन कन्या के समान उछलतीं कूदती हुई और चमचमाती लहरों से युक्त, कन्दुका-विन्दुका नदी प्रवाहित है का संरक्षण शस्त्रधारी, बलशाली वीर राजांका लक्षमण चन्द्र करते

हैं। [अगले श्लोकों में राजांका लक्षमण चन्द्र जी के पूर्वजों की सात पीढ़ियों का बड़ा सुन्दर वर्णन है, मूल (कन्द) में राजांका कन्द से लेकर राजांका लक्षमण चन्द्र तक] । श० 11 प्रारम्भ में वकुला वृक्ष के समान अद्वितीय वंश के मूल (कन्द) में (इस क्षेत्र में राजांका कन्द रहा करते थे। जो कि शत्रुओं का नाश करने और नगरों को जीतने में समर्थ तथा स्कन्द के समान अजय थे। श० 12– इन (राजाँका कन्द के स्वच्छ बुद्धि पुत्र, बुद्ध के हां, प्रभावशाली पुत्र विग्राह हुए जिन्होंने अपने शत्रुओं को उनकी प्यारी स्त्रियों से बिछोड़ ड़ाला। श० 13–फिर विग्राह के पुत्र ब्रह्मा इस भूमि (राज्य) के स्वामी हुए जो अपने शत्रुओं को दण्ड देने में समर्थ थे। श० 14–भाग्यशाली ब्रह्मा के पुत्र डोम्बक हुए जो श्री त्रिअम्बिका के भक्त थे, इन्होंने अपने शत्रुओं के भाग्य को चूमते हुए, शत्रुओं को मछलियों की तरह पकड़ा और मारा। अपने युवराजों के साथ कई ग्राम और नगर जीते। श० – 15 इन (डोम्बक) के पुत्र भुवन भोण) हुए इनकी पत्नी रानी) बड़ी दानी (सागर के तुल्य) थी। राजाँका भुवन शिव भक्त और अपने नरेश के विश्वास पात्र थे। युद्ध में इनकी गर्जना शेर की दहाड़ जैसी थी। इन्होंने घमण्डी शत्रुओं को जगंलों में भागने (रहने) पर मजबूर कर दिया था और अपने नरेश के राज्य की रक्षा की। श०–16 इनके पुत्र का नाम कल्याण था जो अमूल्य रत्नों के भण्डार (पहाड़) और शत्रुओं के सिरों को कूचलने वाले तथा दुखों के सागर से पार उतारने वाला नौका के समान थे। श०-17 इनके आज्ञाकारी पुत्र विहण बड़े बुद्धिमान, वलशाली शत्रुओं को पीड़ित करने वाले और जालन्धर नरेश के चरण कमलो के सेवक (भक्त) थे। श०–18 ह्रदय चन्द्र त्रिगर्त नरेश **(The Poletic King of Trigarta)** की सुपुत्री लक्षानिका से

इनके राम और लक्षमण दो पुत्र हुए। श०-19 बड़ा लड़का जो कि सद्गुणों के कारण पूज्य था, के स्वर्ग सिधारने पर दृढ़ सकंलप वाले छोटे भाई (लक्षमण) ने यहां स्थायी निवास कर लिया। श० 20, 21, 22 राजाँका कन्द के अधिकार में जो सारा राज्य था तथा असन्द के शत्रुओं का नाश करने वाले त्रिगर्त नरेश के चरण कमलों के अन्य सेवकों, के राज्य वर्तमान समय में प्रजा के रक्षक धर्मात्मा, स्तुति योग्य लक्षमण के अधिकार में हैं। जिनकी अद्वितीय सुन्दर और प्रिय पत्नी का नाम मायातला है, कोरग्राम की रक्षा करते हैं। श० 23-यहां सिद्धा नाम के व्यापारी के पवित्र चित वाले लड़के रहते हैं, बड़े लड़के का मन्युक और छोटे का आहुक नाम हैं। श० 24-इनके हृदय में सर्व दुखों और आवागमन से मुक्ति दिलाने वाले तथा भवसागर से पार उतारने वाले श्री शम्भु जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न हुए। श० 25, 26 व 27 इन दोनों भाईयों ने यहां आश्रय से रहित हो चुके श्री वैद्यनाथ जी के श्री शिवलिंग को देखा और (इनके लिये) मन्दिर व मन्दिर के आगे मण्डप बनवाया। इन दोनों सगे भाईयों ने पूर्ण विश्वास के साथ दुबारा गर्भ में न आने (अथवा जन्म मरण जरा और व्याधि से मुक्ति पाने) की घोषणा करते हुए कहा, श्री शम्भु जी पिता समान हैं, फिर भी पिता केवल जन्म देने वाले हैं पर श्री चन्द्रभाल शिव मुक्ति प्रदाता हैं! श० 28-29 मन्युक और आहुक के चारों पूर्वजों, सहिला, पहिला काहिला और सिद्धा को स्वर्गलोक की प्राप्ति हो और विस्तार में न जाकर इनके अन्य बीस कुटुम्बियों को भी स्वर्ग प्राप्ति होगी। इस पवित्र कार्य के लिये इन दोनोंको सर्बउच्च लोक की प्राप्ति होगी, की कामना की गई है। श० 30 राजाँका लक्षमण चन्द्र ने (**Custcmhouse**) राजकोष से छ: द्राम प्रतिदिन बैद्यनाथ के नाम लगाए। श० 31-राजांका की

माता लक्षानिका ने परलम्बा ग्राम में एक हल की भूमि श्री महेश जी के लिये दी। श० 32-राजाँका लक्षमण के वंशज जो इस पवित्र भेंट की रक्षा करेंगे उनकी वृद्धि होगी और जो इसे ले लेंगे उनका पतन होगा। श० 33-34 मन्युक और आहुक ने मन्दिर में प्रकाश आदि के लिये कीरग्राम में अपना तेल निकालने का कारखाना तथा श्री शिवजी की पूजा सामग्री और सेवा आदि के लिये एक दुकान और नवग्राम में चार हल की भूमि भी दिये। श० 35-श्री शिवजी के लिये जिस किसी ने जो भी उपहार अर्पित किये हैं ये सब रहती दुनियां तक कायम रहें। श० 36-37 नरेन्द्र कश्मीर के श्रेष्ठ प्रमात्री भृगंक के पुत्र राम, जिनके मुख में सरस्वती बचपन से ही निवास करती है, साधारण अर्थोंवाली यह कविता लिखी (बनाई)। चावेदा खेतों (**Fields**) से हारा से.......... खेत। वकतन्देवा से बढ़िया भूमि.............................. गुहेक (शिलालेख उत्कीर्ण करने वाला) साका 7×× (दो अंक ×× खण्डित हैं)

मन्दिर से प्राप्त हुआ एक अन्य लेख -"ॐ रविवार फाल्गुन, प्र 5, वि स० 1296, चितकवरें रंग की यह प्रतिमा महा पूज्य और भगवान महावीर की ढोलन तथा अलहण दो व्यापारी भाईयों ने जिनका पिता मासरु था, ने बनवाकर समर्पित की"। वैजनाथ मन्दिर के स्तम्भों और बृषभ की पीठ पर भी अंको सहित कुछ लेख हैं। कुछ शिलालेख, जो क्षीर गंगा की पुरानी पोड़ियों का था और श्री राधा कृष्ण जी के मन्दिर के पास भी एक लेख था, अब नष्ट हो चुके लगते हैं।

□—※—□

मन्दिर दर्शन

पाठकगणों से विनती है कि इस लेख को अति साधारण प्रयास मात्र माना जाए। इस प्राचीन अति विशिष्ट धर्मस्थल पर आकर ऐसा ज्ञात होता है कि समग्रवेद, वेदान्त, तपः साधना, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, समस्त सनातन आर्य वाङ़ मय महा दधि, पुराण लीला यहां उद्घाटित करके रख दिया गया था। धर्म अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों की प्राप्ति ही मनुष्य को सार्थकता कही गई है। इस दृष्टि से भी श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ जी के चारों स्वरुप (ध्यान) यहां क्रमानुसार दर्शाए गए हैं, जिनका वर्णन इसी प्रसंग में किया जा रहा है।

मन्दिर की चारदीवारी में ऐशान, वायव्य और दक्षिण दिशा के तीन द्वार हैं जो एक त्रिभुज अथवा शक्ति यन्त्र के सूचक हैं दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार से प्रवेशार्थ कुछ दूरी से ही मन्दिर का कलश (गरुड़) दृष्टिगोचर होने लग पड़ता है। कलश के पांच भाग है, सबसे ऊपर धातु कलश है। इनके नीचे सत्ताईस कोण युक्त (27 नक्षत्रों का सूचक) पत्थर का छोटा कलश है। सबसे नीचे कई क्विंटल वजन का भारी बड़ा सुन्दर 29 कोण युक्त, पत्थर का बड़ा कलश है। आमलसार कलश के कण्ठ और शुक नासिका के नीचे गर्भ गृह की वेदी के ऊपर बड़े सुन्दर मुक्टाकार (चोखटें) के मध्य त्रिमूर्ति विद्यमान है। दक्षिण द्वार के बाहर एक देहरी है जिसे कोतवाल बताया जाता है सम्भवतः श्री भैरों जी का स्थान है। यात्री इसे अपने दाहिने अंग रखकर आगे जाते

हैं। आगे दो बार पांच-पांच पोड़ियाँ चढ़कर मन्दिर का दक्षिणी मुख्य द्वार है। द्वार के बाहर दोनों तरफ सेवकों के लिये छत वाले स्थान हैं। द्वार के भीतर प्रवेश करने पर हमारे दाहिने हाथ छः भुजायुक्त श्री गणेश जी की और बाएं हाथ श्री हनुमान जी की मानवाकार मूर्तियां हैं। श्रद्धालुजन इन दोनों को मंगलवार और शनिवार को सिन्दूर चढ़ाकर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। 'पश्चिम मुखी मन्दिर'[1] के सामने आंगन में एक ही बड़े शिलापट् से निर्मित वृषभ की मूर्ति है। धर्मग्रन्थों में गाय को पृथ्वी और वृषभ को धर्म का प्रतीक माना जाता है। सार्वभोम मानव धर्म के दस लक्षण "धृति, क्षमा, दमोऽस्तेंय शौचमिन्द्रिय निग्रह। धी विद्या सत्यम् क्रोधो दशकं धर्म लक्षषम्।' बृषभ के दश अंगों में परिलक्षित किये जाते है। (तथा ध्यान, यज्ञ, पूजा और दान भी धर्म के चार पाद माने गए हैं)। श्री शिव जी का "धर्मरूप" यह प्रथम ध्यान है। बृषभ के आगे छतरी वाले चबूतरे पर श्री नन्दी जी (बैठा हुआ बृषभ) आसीन है। इनके आगे मन्दिर की वेदी के चार स्तम्भ हैं। 206 वर्ष पूर्व महाराजा संसार चन्द जी द्वितीय ने वेदी का जीर्णोद्धार किया था। वेदी के आगे दो बड़े सुन्दर स्तम्भों से युक्त ऊंची देहली वाला सभा मडण्प का खुला द्वार है। द्वार के दोनों स्तम्भों और इन के दाएं बाएं की साथ लगती दोवारों के मध्य रथकों के लिये खाली स्थान (रास्ता) छोड़ा गया है। दोनों

---

[1]जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है (प्रथम बैशाख) तब सूर्यास्त के समय सूर्य किरणें सीधी श्री शिवलिंग पर (गर्भ गृह के अन्दर) आ जाती हैं (इस प्रकार मन्दिर का दक्षिणी भाग सारा साल धूप में और उत्तरी भाग छाया में रहते हैं) तथा 21 जून और दिसम्बर को भी सूर्य रस्मियां सभा मण्डप में विशेष स्थानों और मूर्तियों को स्पर्श करती हैं।

ओर की दीवारों में सामने की तरफ नीचे से ऊपर को एक दूसरी पर पाँच-पांच मूर्तियां (कुल दस) श्री महादेव जी के पार्षदों श्री गणेश जी, श्री कार्तिकेय जी, श्री चण्ड और श्री भृंगी आदि की हैं। श्री गणेश जी का बड़ा सुन्दर ध्यान है इन की छः भुजाएं हैं तथा दाहिने अंग सिंह और वाएं अंग मूषक दो वाहनों पर आरुढ़ हैं। श्री गणेश के ऊपर श्रीं कार्तिकेयजी के मुख और वाहन मयूर खण्डित हो गए हैं। दक्षिणी भाग में सबसे नीचे श्री चण्ड जी अक्ष सूत्र और त्रिशूल लिये हैं। इन के ऊपर श्री भृंगी जी नृत्य मुद्रा में दर्शाए गए हैं इनका शरीर कृश और मस्तक कूष्माण्ड के समान स्थूल और गंजा है (अ० पु० 5/37-43) दोनों स्तम्भों के पीछे 'साथ लगती दीवारों में' स्तम्भ मुख किये हुए उत्तर में नीचे श्री महांकाल' कपाली जी का ध्यान (मूर्ति) है। इनकी बाईं हथेली पर श्री ब्रह्मा जी का पांचवा मुख चिपका हुआ है (अ० पु 50 वा० पु० 2/35-38। इनके ऊपर हंसारुढ़ श्री ब्रह्मा जी और ऊपर श्री ब्रह्मा जी के ध्यान हैं। इसी प्रकार दक्षिण भाग में' नीचे श्री नन्दीश्वर जी अपने हाथों में त्रिशूल धारण किये खड़े हैं। इनके ऊपर गरुड़ आरुढ़ श्री विष्णु जी और ऊपर श्री लक्ष्मी जी के ध्यान हैं। दोनों द्वार स्तम्भों को बड़ी सुन्दरता से बनाया गया है, स्तम्भों के ऊपरी भागों (सिरों) पर श्री कार्तिकेयजी और श्री गणेश जी दर्शाए गए हैं। दोनों स्तम्भों के ऊपर रखे हुए द्वार शिलापट में सर्व श्री ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी के दृश्य हैं इनके दृश्यों के मध्य एक सुन्दर चोखटे में सभा मण्डप द्वार के ऊपर, ठीक मध्य में) श्री शिवजी श्री पार्वती सहित नृत्य कर रहे हैं, इन चरणों में वृषभ दर्शाया गया है। इस ध्यान में लगता है कि श्री महादेव जी ने स्त्री रुप धारण कर रखा है। श्री महादेव जी का स्त्री रुप धारण करने का वर्णन शिव पुराण और अन्य पुराणों में

भी जाता है। श्री वाल्मीकीय रामायण उत्तर काण्ड सर्ग 79/12 में "कृत्वा स्त्री रुप मात्मानमुमेशों गोपति ध्वजः। देव्याः प्रिय चिकीर्षुः संस्तस्मिन पर्वतनिर्झरे" का उल्लेख है। नृत्य मुद्रा में श्री शिव-पार्वती जी का यह "अर्थ रुप" दूसरा ध्यान है।

सभा मण्डप में प्रवेश करने पर सभा मण्डप की उत्तरी और दक्षिणी दीवारों में (सभा मण्डप द्वार के निकट ही) दो प्राचीन शिलालेख शारदा लिपी और संस्कृत भाषा में हैं (इनका वर्णन मन्दिर निर्माण के प्रसंग में किया जा चुका है) दक्षिणी शिलालेख के समीप (नीचे) फर्श में गोल आकार में वास्तु विद्यमान है। सभा मण्डप में एक एक भारी शिलापट से निर्मित चार मध्यवर्ती स्तम्भ हैं। इनके ऊपर नौ भागों में सभा मण्डप की छत डाली गई है। बीच वाला बड़ा भाग गोलाकार में गुंवद जैसा है। चारों मध्यवर्ती स्तम्भों के उतरी भागो पर अनेक प्रकार की बड़ी सुन्दर प्रतिमाएं और वेल बूटे बनाए गए हैं, चारों स्तम्भों के ऊपर कठोर लकड़ी से बनी हुई 'सैंकड़ों वर्ष पुरानी' देवियों की चार मूर्तियाँ मन्दिर की छत के साथ जुड़ी हुई थी, अब भी इनके बचे हुए टुकड़े देखे जा सकते हैं। छत के बड़े बड़े शिलापटों पर और बीच वाले गोलाकार में देवी देवताओं की अनेक मूर्तियां, लीलाएं और वेल बूटे बड़ी सुदन्रता से बनाए गए हैं। इनमें श्री महादेव जी की बारात में श्री गणेश जी की छः सूण्ड वाली दुर्लभ छोटी सी मूर्ति भी है, ऐसी गणेश जो की मूर्ति अन्यत्र नहीं मिलती है। प्राचीन कला कौशल के इस अनुपम भण्डार पर दृष्टि जाते ही यात्री आश्चार्य चकित होकर रह जाते हैं। सभा मण्डप की उत्तरी और दक्षिणी दीवारों में प्रकाश व वायु आदि की सुव्यवस्था हेतु फर्श से 5 फूट की ऊंचाई पर बड़े आकार के गवाक्ष है, इनमें

दीवारों से बाहर की ओर बढ़े हुए गरुड़ासन और सिह आसन हैं। दो छोटे-छोटे स्तम्भों पर इनकी छत्तें डाली गई हैं। इन दोनों आसनों की दीवारों, छत्तों और स्तम्भों पर अनेक प्रकार की कला कृत्तियाँ, वेल-बूटे और देवियों की बड़ी सुन्दर मूर्तियां बनाई गई हैं, इनमें से कुछ एक मूर्तियां 1200 वर्ष, 800 वर्ष, 400 वर्ष और 200 वर्ष के लगभग पुरानी हैं। इन दोनों आसनों को बार-बार क्षति पहुंचती रही है और बार-बार जीर्णोद्धार किया जाता रहा है। जो मूर्तियां नष्ट हो जाती रही हैं, उनके स्थान पूरे किये जाते रहे हैं। कुछ एक पुरानी मूर्तियों की नकलें भी बनाई गई हैं। (एक स्त्री अपने सिर के बालों को संवार रही है, दूसरी अगंड़ाई लेती हुई दर्शाई गई है) परन्तु इनका आपस में बड़ा अन्तर है। सिह आसन की छत के पूर्वी भाग के साथ रामायण से सम्बन्धित कवंध की भुजा और हाथ को श्री राम लक्षमण धनुष चढ़ाए काट रहे हैं। इसी प्रकार रावण आदि को भी कुछ मूर्तियाँ दोनों आसनों में देखी जा सकती है जो कि 1200 वर्ष के लगभग पुरानी लगती हैं। गरुड़ासन में मच्छिन्दर नाथ आदि की बड़ी सुन्दर मूर्तियां हैं तथा इसकी छत के पूर्वी भाग में मिथुन राशि की मूर्ति है। मेष राशि की मूर्ति (मींढा पुरातत्व विभाग के भण्डार में है।) इससे ज्ञात होता है कि मन्दिर से सम्बन्धित भाव और राशि कुण्डली भी दर्शाई गई थी। इन दोनों आसनों में बहुत ही सुन्दर अनेक छोटी व बड़ी मूर्तियाँ हैं जिनके वर्णन से लेख लम्बा हो जाएगा। मन्दिर में उत्कीर्ण कला-कृतियां प्राचीन भारतीय कला का श्रेष्ठ दृष्टांत हैं जिनकी व्याख्या सरल नहीं कही जा सकती है।

सभा मण्डप और गर्भगृह की वेदी के साथ लगती दीवार के मध्य खुले द्वार अथवा मार्ग के रुप में खाली स्थान छोड़ा गया है। इस मार्ग के दोनों तरफ की दीवारों में (सामने की तरफ) एक

दूसरी पर पांच-पांच देवियों की बड़ी सुन्दर प्राचीन मूर्तियां हैं। दोनों तरफ की ऊपर वाली चार-चार मूर्तियां अपने हाथों में वाद्य यन्त्र लिये खड़ी हैं इनके साथ पक्षी आदि की आकृतियां दर्शाई गई हैं। नीचे वाली दोनों मूर्तियां आकार में बड़ी हैं और इनके साथ लगती द्वार मुख किये हुए भी एक एक जुड़वां मूर्ति हैं। यह चारों बड़ी मूर्तियां श्री गंगा जी, यमुना जी, सरस्वती जी और नर्वदा जी की है, इनके चरणों में मकर, कच्छप, हंस और सिंह दर्शाए गए हैं। ये सभी देवियां अपने हाथों में कलश और कमल लिये खड़ी हैं। इनके अंग खण्डित हो गए हैं और सबसे प्राचीन तथा 2000 वर्ष के लगभग पुरानी लगती हैं (जब कि शिलालेखों में आठवीं शताब्दी का उल्लेख है)

गर्भ गृह की वेदी का फर्श, सभामण्डप के फर्श से ऊंचा है जिसपर गर्भ गृह द्वार के सन्मुख दोनों तरफ दो द्वार स्तम्भ हैं। इन स्तम्भों और साथ लगती दीवारों के बीच थोड़ा खुला स्थान छोड़ा गया है स्तम्भों के पीछे दोनों तरफ देवी की एक-एक मूर्ति है। इन मूर्तियों के ऊपर कुछ दृश्य दर्शाए गए हैं उत्तरी भाग के एक दृश्य में ऊंचे गद्दे वाले आसन पर एक जटाधारी महात्मा दूसरे तूंबो वाले साधु को एक पुस्तक दे रहे हैं (यह कोई संकेत सा लगता है) दोनों स्तम्भों के ऊपर रखे शिलापटों में सबसे ऊपर वाले भाग में तीन दृश्य दर्शाए गए हैं, इन दृश्यों के बीच (दो बार) अन्दर और बाहर की तरफ आधा-आधा पट खुले हुए द्वारों में एक व्यक्ति तिरछा हो कर खड़ा हैं। इन तीनों दृश्यों में 11 पुरुष और 7 स्त्रियों से रुद्रों और मातृकाओं का ज्ञान होता है। इन से नीचे वाले शिलापट के मध्य एक बड़े सुन्दर चौखटे में सर्व श्रृंगार किये हुए श्री चन्द्रभाल शिवजी श्री भवानी जी को

अपने अंक में लिये हुए वृषभ आरुढ़ हैं। श्री शिवजी अपने चारों हाथों में त्रिशूल, भुजंग, श्री पार्वती जी को अपने अंक में लिये और चौथे दाएं हाथ में माला धारण किये हैं। यह चारों क्रमश: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को परिलक्षित करते हैं। श्री पार्वती जी अपनी दाहिनी भुजा व हाथ श्री शिवजी के दाहिने कन्धे पर रखे हैं और बाएं हाथ में दर्पण धारण किये हैं तथा इनका दाहिना चरण, कमल पर दर्शाया गया है। श्री पार्वती जी के बाएं हाथ में दर्पण दृश्य प्रपंच जगत्) को दर्शाता है। आधार जिस प्रकार आधेय को धारण करता है उसी प्रकार श्री शिवजी, जीव शक्ति (श्री पार्वती) को और जीव शक्ति इस दृश्य प्रपंच (संसार) को धारण किये हुए हैं अथवा महाशक्ति भवानी अपने माया रुपी दर्पण में अपने श्रृंगारों तथा भावों को देख कर जीव रुप से आप ही मोहित हो रही हैं। माया शबल ब्रह्म ही ध्यान का विषय है, अपनी माया शक्ति से संवलित होकर ही जगदीशवर कहलाते हैं। श्री शिव शक्ति का यह ध्यान सर्व कामना पूर्ण करने वाला "काम रुप" तीसरा ध्यान है। शिवशक्ति के इस ध्यान की व्याख्या करना मेरे जैसे मनुष्यों की बुद्धि से बाहर है। इस रहस्य को समझना स्वयं रहस्यमय बन जाना है। इसी प्रकार के बड़े आकर के दो ध्यान श्री मुरली मनोहर जी के मन्दिर के पास सामने की दीवार में हैं, तथा ऐशान कोण द्वार के (बाहर) शिलापट पर और अन्य स्थानों पर भी हैं। (श्री सिद्धनाथ (सिद्धेश्वर) के मन्दिर के गर्भ गृह द्वार पर भी है। गर्भ गृह द्वार के साथ दोनों तरफ दो शिलापटों पर उत्कीर्ण की गई, यहां के राजाओं की दो मूर्तियां रखी हुई हैं। कहा जाता है कि इन्होंने मन्दिर की रक्षा में अपने प्राण दे दिये थे। (इन्हें सकड़ी ग्राम के राजा श्री गंगा चन्द (गंगा सिंह) के नाम से याद किया जाता है।)

गर्भ गृह द्वार तीन बड़े शिलापटों से बनाया गया है। द्वार के ऊपर वाले शिलापट के मध्य में श्री गणेश जी की मूर्ति है अन्य दोनों तरफ के द्वार शिलापटों के नीचे वाले भागों में श्री गंगा जी और श्री यमुना जी की मूर्तियां बनाई गई हैं। सभी शिलापटों पर वेल–बूटे आदि सात प्रकार की कला कृत्यों से सात रेखाओं में दर्शाए गए हैं। कठोर पत्थर के इन शिलापटों पर योगासन और नृत्य आदि की मुद्राओं में उत्कीर्ण की गई छोटी–छोटी मूर्तियां ध्यान से देखने योग्य हैं, जो कि लताकार में बड़ी सुन्दरता से बनाई गई हैं। गर्भ गृह के सामने वाली (पूर्वी) दीवार में तीन मूर्तियां हैं मध्य वाली मूर्ति श्री हनुमान जी की लगती है। मन्दिर के आँगन में वृषभ के पीछे खड़े होकर, गर्भ गृह के अन्दर सीधी दृष्टि डालने पर सर्वप्रथम इन्हीं मूर्तियों के दर्शन होते हैं। उत्तरी दीवार में तिरछी रेखा में एक दूसरे से बड़े आकार के तीन स्थानों में से दो में मूर्तियां हैं, ये राजा लक्ष्मण चन्द्र और मन्युक व आहुक की मूर्तियां बताई जाती हैं। इन्ही के पास श्री लक्ष्मी नारायण जी का त्रिविक्रम अथवा श्री अच्युत रुप में ध्यान है, यह मूर्ति किसी अन्य ध्वस्त हो चुके मन्दिर से लाकर रखी गई हैं। तीसरी और तेरहवीं शताब्दी में बैजनाथ में अनेक मन्दिर मौजूद थे।)

गर्भ गृह के मध्य, उत्तर मुखी जलहरी में दो भागों में विभक्त श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ (बैजनाथ) जी का मोक्ष फल प्रदायक श्री ज्योर्तिलिंग विद्यमान है। यह श्री शिव शक्ति जी का "मोक्ष रुप" चौथा ध्यान है। (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों ध्यानों का वर्णन पूरा हुआ)। श्री शिब शक्ति जी की एक (लिंग) रुप में यहाँ पूजा की जाती है यह सकल और निष्कल अथवा साकार

और निराकार दोनों को दर्शाता हैं। तथा श्री शिव शक्ति का संयुक्त रुप हैं।

पदम पुराण में श्री शिव जी कहते हैं :-

"शक्ति विना महेशानिसंदाह शव रुपक: । शक्ति युक्तों यदा देवी शिवोऽहं सर्वकामदा: ।' अर्थात हे दुर्गे (शक्ति) ! तुम्हीं मेरी शक्ति हो, तुम्हारे विना मैं शव बन जाता हूं । (शिव शब्द में शक्ति रुप 'इ' की मात्रा हटा दी जाए तो शव बन जाता हैं) शक्ति का आधार एवं अधिष्ठान शिव हैं। यजुर्वेद में आया है "आरवस्तेंरुद्र पशुस्तंजुष खैषते रुद्र भाग: सहस्वस्ताम्विकाया तं जुषस्व" अर्थात - शिव पर ब्रह्म में शक्ति स्वभाव से ही रहती है। महादेवी पार्वती जी शक्ति हैं और महादेव जी शक्तिमान (नशिवेन बिना शक्तिर्न शक्त्या च बिना शिव: - शि० पु० वा० सं० उ० ख० 4/12) । "वागार्थों नित्यं युतौ परस्पर शिवशक्ति मायावेतौ" अर्थात वाणी और अर्थ के समान शिव और शक्ति नित्य युक्त हैं। शिव और शक्ति में अभेद भाव ही अद्वैत का सिद्धान्त है। शिव और शक्ति परस्पर पूरक (*Comlimentary*) और परिशिष्ठ (*Supplimentary*) हैं"। मोक्ष फल प्रदाता श्री शिवलिंग के ऊपर (छत में) सोलह दल के मध्य अष्टदल कमल है जो श्री शिव जी की अष्टमूर्ति को दर्शाता है जिनसे सारा जगत व्याप्त हो रहा है श्री शिव जी की अष्टमूर्ति का उल्लेख अनेक ग्रन्थों में आता है। महाकवि कालीदास जी "अवेहिमां किंकरमष्टमूर्तें" (रघु० 2/35) तथा "स्वमेव मूर्त्यान्तरमस्टमूर्ति." (कु० सं० 1/57) में तथा (वा० पु० आ० 43/62) में भी अष्टमूर्ति शंकर का उल्लेख है क्षिति, अप, तेज, मरुत, ब्योम, चन्द्र, सूर्य और यजमान् श्री शिव जी की यह प्रत्यक्ष अष्टमूर्ति कही गई हैं, जिनमें यह विश्व ओत-प्रोत है।

शिव पुराण सप्तम खण्ड अ० 4 मेंश्री शिवजी की अष्टमूर्ति तथा अवतारों का वर्णन है। शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान तथा महादेव, ये शिव की आठ मूर्तियां कही गई हैं जिनसे क्रमशः भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चन्द्रमा अधिष्ठित होते हैं। पृथ्वीमयी मूर्ति (शर्व) सम्पूर्ण चराचर जगत को धारण करती है। जलमयी मूर्ति (भव) जगत के लिये जीवन-दायिनी है, तेजोमयी मूर्ति (रुद्र) से विश्व की स्थिति है, वायुमयी मूर्ति (उग्र) जगत को गतिशील बनाती है और भरण-पोषग भी करती है, आकाशरुपिणी मूर्ति (भीम) सबको अवकाश देने वाली सर्वव्यापनी तथा भूतसमुदाय की भेदिका है, सर्व क्षेत्रों में सम्पूर्ण आत्माओं की अधिष्ठात्री शिवमूर्ति को पशुपति और सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करती हुई, अमृतमयी चन्द्रदेव, श्री शिव के महादेव नामक विग्रह हैं, अतः उन्हें महदेव मूर्ति कहते हैं जो श्री शिव जी साक्षात स्वरुप है तथा अन्य सभी मूर्तियों में व्यापक है। श्वे० श्व० उ०1-4 में विश्व चक्र के वर्णन में छः अष्टकों का उल्लेख आया है श्री गीता जी 7/4-5 में भी श्री भगवान जी की आठ प्रकार की परा और अपरा प्रकृति का वर्णन है जिससे सम्पूर्ण जगत व्याप्त है। अष्टमूर्ति धारी वरदायक शिवजी की स्तुति जो कि श्री भृगुनन्दन शुक्र ने अष्टमूर्त्याष्टक स्त्रोत द्वारा की है (जिसका उल्लेख शि० पु० रु० सं० युद्ध ख० 50/24-32 में आया है) श्री शिव पूजा के प्रसंग में आगे किया गया है।

□❀□

[परिक्रमा]

—❀— —❀—

श्री मन्दिर की (बाहर की) वेदी से उत्तरी भाग की ओर परिक्रमा करते हुए सर्वप्रथम श्री ब्रह्मा जी का सनक-सनन्दन आदि चारों कुमारों के साथ ध्यान है। (2) श्री हरिहर जी का चतुर्भुजी ध्यान है। इनके दाएं हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में चक्र है। दाएं अंग में रुद्र और बाएं अंग में श्री विष्णु (बारह) के चिन्ह हैं तथा दाएं पार्शव में वृषारुढ़ श्री गौरी और बाएं पार्शव में गरुड़ारुढ़ श्री लक्ष्मी जी हैं (अ० पु० 49/25-28) श्री हरिहर जी ने अन्य दो हाथों में दण्ड धारण किया हुआ है। महा० भा० शा० पर्व में दण्ड के बारे में वर्णन आया है "श्री भगवान शूलपाणि ने अपने आप को दण्ड रुप में प्रकट किया, यह काल रुप दण्ड सृष्टि के आदि और अन्त में भी जागरुक रहता है। यह दण्ड ही सम्पूर्ण लोकों का ईश्वर तथा प्रजापति है। यह साक्षात श्री महादेव जी का स्वरुप हैं।, '(3) श्री चन्द्रभाल महादेव और श्री हिमाचल पुत्री पार्वती जी के विवाह का ध्यान है, इस ध्यान में प्रज्वलित अग्नि, श्री ब्रह्मा, विष्णु, शिवजी, देवगुरु, कार्तिकेय और श्री गणेश जी भी दर्शाए गए हैं। श्री गणेश जी की उपस्थिति बारे शंका का समाधान रा० च० मा० बा० काण्ड दोहा 110 में इस प्रकार है "मुनि अनुशासन गणपति ही पुजेउ शम्भु भवानी। कोउ सुनि संशय करे, जानि सुर अनादि जिय जानि।" तथा शि० पु० तृतीय खण्ड आ० 57 व 61 में भी श्री गणपति और गौरी (शक्ति) के पूजन का उल्लेख है (पञ्च देवता श्री ब्रह्मा, विष्णु,

शिव, गौरी (शक्ति) और गणेश अनादि हैं)। (4) श्री सरस्वती देवी जी का चतुर्भुजी ध्यान है। अपने चारों हाथों में माला, वीणा, पुस्तक और कमण्डल धारण किए हैं। इनके दाए पार्शव में नाद लिए और बांए पार्शव में वाद्य यन्त्र लिए इनकी अनुचर देवियां खड़ी हैं। (5) मृगारुढ़ श्री वायु देवता का ध्यान है (अ० पु० 16/28-32) (6) श्री दुर्गा भगवति जी महिषासुर का वध करते हुए (7) श्री घण्टा कर्ण जी (बीच के दो हाथो में त्रिशूल लिये हैं (अ० पु० 50/39-43) यहां से वापस वेदी पर आकर दक्षिणी भाग की ओर परिक्रमा करते हुए सर्वप्रथम (1) श्री शिव पार्वती जी का अर्द्धनारीश्वर (गौरीश्वर) ध्यान है, इनके साथ श्री गणेश जी और वृषभ भी दर्शाए गए हैं। (संक्षिप्त वर्णन "शिव और शक्ति" तथा "शिव तत्व" प्रसंग में देखें)। (2) श्री शिव विष्णु और लक्ष्मी जी का गरुड़ आरूढ़ अर्द्धनारीश्वर ध्यान है। आधा दायाँ अंग श्री विष्णु जी का है जो अपने चारों हाथों में शंख, चक्र अर्धविकसित पदम और गदा धारण किये हैं, आधा बायां अंग श्री लक्ष्मी जी का हैं, जो चारों हाथों में दर्पण, कलश, विकसित कमल और पुस्तक धारण किये हैं। (3) पुरानी मूर्ति के स्थान पर बाद में अष्टभुजा दुर्गा जी की मूर्ति रखी गई है। (4) पुरानी मूर्ति के स्थान पर जो मूर्ति मौजुद है इसे दन्दोच्छ होलिका माता और पीताम्बरा आदि नामों से जाना जाता है। (यह सल्याणा के वेदवा ब्राह्मणों की कुलजा देवी है।) होली और पंचभीषमों में इनकी विशेष पूजा की जाती है (इस ध्यान पर शोध की जानी चाहिए ऐसी मूर्तियां सिद्धनाथ और आशापुरी के मन्दिरों में भी हैं)। (5) श्री महालक्ष्मी जी (गज लक्ष्मी अथवा कमला) का चतुर्भुजी ध्यान है। ऊंचे कमल आसन पर आसीन 'श्री' के दो हाथों में विकसित कमल हैं। अन्य दो हाथों

में पुस्तक तथा वरद मुद्रा है। दाएं पार्शव में कमण्डल है और दो हाथी सिर पर से स्नान करा रहे हैं। (6) व (7) स्थानों में पुरानी मूर्तियों की स्थान पूर्ति की गई है (यहां वेडोल सी मूर्ति और मोहरा (यज्ञपाल) रखे गए हैं।) इसके आगे गर्भ गृह (मन्दिर) की दक्षिणी दीवार में बीच वाली बड़ी मूर्ति दश भुजा श्री रुद्र चण्डा (महाकाली) दुर्गा आलीढ़ा आकृति में नर आरुढ़ हैं। सिर के वाल ऊपर को उठे हुए हैं। और शरीर कृश हैं तथा तर्जनी उंगली होंठों पर रखी है। श्री दुर्गा ने अपने वाकी के नौ हाथों में कटा हुआ मानव शीश, डमरु, खड़ग, कटार, घण्टा आदि धारण कर रखे हैं, बीच वाले दो हाथों में त्रिशूल लेकर एक असुर को वदीर्ण कर रही हैं और दाएं भाग एक दूसरे असुर पर कटार से प्रहार करते हुए दर्शाई गई है (अ० पु० अ० 50, 20-23, 31–33)। इसके दोनों तरफ के चारों स्थानों में बकरे पर अग्नि देव जी, हाथी पर इन्दिरानी जी, मेढ़े पर वरुण जी और एक स्थान खाली है। पूर्व दिशा में बीच वाली सूर्यदेव की पुरानी बड़ी मूर्ति के न रहने पर एक दूसरी छोटी मूर्ति रख दी गई है। इसके दोनों तरफ के दो स्थानों में हाथी पर देवराज इन्द्र और श्री कुवेर जी की मूर्तियां हैं, अन्य दो स्थान खाली हैं। उत्तर दिशा में बीच वाली बड़ी मूर्ति श्री कार्तिकेय जी मयूरारुढ़ हैं। इनके छः मुख हैं, इनके दोनों तरफ के चार स्थानों में एक खाली है और अन्य तीनों में श्री शक्ति, नर आरुढ़ श्री नेऋतिदेव और श्री हनुमान जी की मूर्तियां हैं। श्री कार्यिकेय जी की मूर्ति के नीचे, उत्तर मूखी जलहरो द्वारा श्री शिवजी पर चढ़ाया हुआ जल बाहर आने का मार्ग है (सिंह मुख है)। यहां से वापसी पर (सभामण्डप की बाहरी दक्षिणी दीवार में) श्री लक्ष्मी जी (ध्यान नं० 5) के पास से श्री भगवान जी के दस अवतारों के ध्यान

हैं जो कि क्रमानुसार शुरु हो कर उत्तरी भाग में श्री वायु देव जी (ध्यान नं 5) के पास समाप्त होते हैं। श्री लक्ष्मी जीं और मच्छ (मीन) का सम्बन्ध सागर (रत्नाकर) से है, अत: श्री लक्ष्मी जी के पास से यह क्रम शुरु होता है, मन्दिर के दक्षिणी भाग में मच्छ कच्छ, वाराह। वाराह अवतार की मूर्ति का जो वर्णन अ० पु० अ० 49/1-4 तथा 17-18, में आया है उसके अनुसार, "मनुष्याकार दाहिने हाथों में चक्र और गदा, वाएं हाथों में शंख और पदम अथवा देवी (लक्ष्मी) उनके वाएं कूरपर (कोहनी) का सहारा लिये रहती है। पृथ्वी तथा अनन्त चरणों के अनुगत होते हैं। शेषनाग करतल में, वाएं हाथ से पृथ्वी को और वाम भाग में लक्ष्मी को धारण करते हैं। जब लक्ष्मी साथ हो तो पृथ्वी को चरणों में सलंग्न बनाना चाहिये"। वाराह से आगे नरसिंह, सामने की तरफ वामन भगवान जी हैं। उत्तरी भाग में यह क्रम (वार वार मुरम्मत के कारण) गड़ बड़ हो गया है श्री परशुराम जी ऊपर हैं और नीचे मातृका की मूर्ति लगा दी गई है। इन के आगे धनुष और तुणीर लिये कल्की जी का ध्यान है (अ० पु० अ० 49/1-9 के अनुसार-घोड़े पर तलवार सहित अथवा बगैर घोड़े के केवल धनुष और तुणीर लिये बनाना चाहिये)-आगे वलराम (हलधर) और बुद्ध देव जी के अवतार हैं।

मन्दिर की (चार दीवारी के अन्दर) परिक्रमा में तीन छोटे छोटे मन्दिर और चबुत्तरों पर दो शिवलिंग विद्यमान हैं। प्राचीन मन्दिरों के ध्वस्त हो जाने पर इन्हें दौवारा बनाया गया था। श्री मुरली मनोहर जी के मन्दिर में श्री कृष्ण-राधा और गरुड़ जी की मूर्तियां हैं। श्री मुरली मनोहर जी कें चरणों के नीचे ध्वस्त हो चुके मन्दिर का एक शिलापट रखा हुआ है, जिसमें

बड़ी सुन्दर छोटी-छोटी मूर्तियां बनी हुई हैं और द्वार के पास दीवार में भी लक्ष्मी नारायण जी की एक प्राचीन मूर्ति लगी हुई है। इसी मन्दिर के सामने एक छत्तरी वाले चबूत्तरे पर नर्वदश्वरों की शिला थी, लगभग चालीस वर्ष पहले इस चबूत्तरे को उखाड़ दिया गया था। चबूत्तरे के अन्दर, पांचमुखी श्री शिवजी की एक छोटी सी मूर्ति गुप्त रुप से रखी हुई निकली थी जिसके साथ ताम्बे के एक वर्तन में से नली द्वारा श्री शिव जी के शीश पर पानी की बून्दें गिरती रहने का प्रबन्ध किया गया था। नर्वदश्वरों की शिला अब वृषभ (बैल) के आगे रखी हुई है, जिस की जल-हरियों में अब ज्योतियां जलाई जाती हैं वृषभ के पीछे एक चौकार कुण्ड था, जो बाद मे भर दिया गया अब यहां हवन कुण्ड बनाया गया है (सम्भवत: पहले भी यह हवन कुण्ड था)। पास ही महा-ऋषी जम्दग्नि जी से सम्बन्धित, जम्दग्नि जी का मन्दिर है, इसमें एक छोटा सा शिवलिंग विद्यमान है। इस मन्दिर के अन्दर दीवारों में ध्वस्त हो चुके प्राचीन मन्दिर की श्री गणेश और श्री वुद्ध देव जी की बड़ी सुन्दर प्राचीन मूर्तियां लगी हुई हैं। श्री वुद्ध देव जी का आसन दो शेरों पर है जिनके दोनों तरफ दो हाथी खड़े हैं, साथ में चार चवंरधारी और एक मूर्ति शीश पर दर्शाई गई है। इसी मन्दिर में अन्य तीन प्राचीन मूर्तियां भी रखी हुई थीं जो अब पुरातत्व विभाग के संरक्षण में हैं। तीसरा मन्दिर श्री बैद्यनाथ तारा सिद्ध पीठ के भैरव जी का है, इसमें एक शिवलिंग और सामने की दीवार में अष्टभुजा दुर्गा की मूर्ति है। पास ही छत्त वाले एक छोटे चबुत्तरे पर शिवलिंग हैं जिसकी जानकारी नहीं मिलती है इसके साथ ही छत्त वाले ऊंचे चबुत्तरे पर भी नील कण्ठ महादेव जी का बड़ा सुन्दर प्राकृतिक शिवलिंग विद्यमान है। मोर्चाबन्द मजबूत चार दीवारी की पुरानी दीवार छः फुट

चौड़ी (मोटी) थी, ऐशान कोण की क्षति ग्रस्त बुर्जी का द्वार इस का स्पष्ट प्रमाण है। पास ही पूर्व दिशा की तरफ एक द्वार है जिसके दोनों तरफ श्री गंगा और यमुना को प्राचीन मूर्तियां हैं, द्वार के दूसरी (बाहर की) तरफ भी द्वार शिलापटों पर बड़ी सुन्दर प्राचीन मूर्तियां बनी हुई हैं। पूर्व दिशा में वाड़ी नाम का एक जल कुण्ड और सरोवर थे, इन दोनों का सम्बन्ध लंकापति रावण से बताया जाता है, अब यह दोनों ही मिट्टी से भर चुके हैं (बैजनाथ में रावणेश्वरम नाम का स्थान (क्षति ग्रस्त मन्दिर), चरण और यह दोनों जलाशय आदि अन्य स्थान रावण से सम्बन्धित हैं)।

❀ — ❀

शिल्प एवं वास्तू कला

मन्दिर दर्शन प्रसंग में देवी देवताओं के मुख्य ध्यानों (मूर्तियों) के सम्बन्भ में दी गई संक्षिप्त सी जानकारी से ही, उत्तर भारत के इस प्राचीन मन्दिर की महानता का अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है। तन्त्र शास्त्रों के ज्ञाताओं के लिये इस रहस्यमय सिद्ध स्थल की महानता और भी अधिक बढ़कर हैं। इस विशिष्ठ मन्दिर पर शिल्प और बास्तू कला को लेकर अलग से एक पुस्तक लिखी जा सकती है।

शिल्प कला— योग आसन 'पूजा' संगीत, नृत्य श्रृगांर और युद्ध आदि कलाओं को दर्शाने वाले दृष्य और दूसरी अनेक छोटी व बड़ी मूर्तियों की भावात्मक मुद्रायें दर्शकों को मन्त्र मुग्ध कर देने वाली हैं। मूर्तियों के पैरों के तलों में चक्र, आदि के चिन्हों से ले

कर सिर तक के सभी अंगों प्रत्यगों में सम्बन्धित भाव को जिस सुन्दरता और सूक्ष्मता से तरास कर उत्कीर्ण किया गया है, ऐसी शिल्पकला उत्तरी भारत में अन्यत्र नहीं हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के शिल्प की शैली के कुछ सुन्दर रुप, (इस प्रकार हैं) जैसे-मन्दिर के आँगन में वृषभ और नन्दी (बैठा हुआ बैल) की आँखों आदि की बनावट, सभा मण्डप द्वार पर श्री शिवजी के दश पार्षदों में से श्री गणेश व भृंगी और अन्य आठ पार्षदों की बनावट तथा मन्दिर के गर्भ गृह की उत्तरी (बाहरी) दीवार में श्री कार्तिकेय और दक्षिणी दीवार में श्री दुर्गा चण्डी (काली) की बड़ी मूर्ति की बनावट, में देखें जा सकते हैं। भिन्न-भिन्न काल सम्बन्धी मूर्ति कला के कुछ रुप बड़ी आसानी से सिंह और गरुड़ आसनों में देखें जा सकते हैं, जिन का वर्णन मन्दिर दर्शन प्रसंग में भी कर आए हैं। एक नारी अपनी केश राशी को संवार रही है दूसरी अगंड़ाई ले रही है यह दोनों प्राचीन मूर्तियां सिंह आसन में दक्षिण मुख हैं, इनकी नकलें इसी आसन में पश्चिम मुख बनाई गई हैं। प्राचीन मूल मूर्तियों और बाद में बनाई गई नकलों के शिल्प और समय का अन्तर स्पष्ट दृष्टि में आ जाता है। सिंह आसन में ही एक प्राचीन मूर्ति में एक नारी बड़े सुन्दर अन्दाज में दर्पण लिये खड़ी है जो कि प्राचीन शिल्प साधना का जीवित रुप है। गर्भ गृह की दीवारों के बाहरी भाग में पन्द्राह मुख्य देव मूर्तियों के साथ, तत्कालीन मन्दिर शैलियों के सताईस मन्दिरों के अति सुन्दर रुप और सभा मण्डप के चारों बाहरी कोनों व इनके मध्य 'उत्तर' दक्षिण और सामने की दीवारों में चौदह मुख्य देव मूर्तियों के लिये त्रिमूर्तियों सहित बनाए गए चौदह मन्दिर, प्राचीन भारतीय वास्तू कला के भव्य प्रतीक हैं जो कि इस प्राचीन अनुपम मन्दिर

को अत्यन्त आकर्षक बना देते हैं ।* सारा मन्दिर अनेक प्रकार के अति सुन्दर फूल, वेलवूटों आदि के कलात्मक रुपों से भरा पड़ा है जिनकी शोभा देखते ही बनती हैं ।

वास्तूकला — उत्तरी भारत में गुप्त कालीन वास्तू कला के प्रतीक इस प्राचीन मन्दिर के निर्माण और उसके पश्चात् समय समय पर की जाती रही मुरम्मतों से मूल वास्तू शिल्प को क्षति पहुंचतो रही हैं "ऐसे विचार विश्व विख्यात वास्तू कला के विद्वान श्री **James Fergussion** ने अपनी पुस्तक **History of Indian Eastern Architecture Vol I Page** 297-301 पर प्रकट किये हैं । जैम्ज फरगूसन आगे लिखते हैं कि "इस मन्दिर के चिन्ह इस तथ्य का स्पष्ट संकेत देते हैं कि यह मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। मन्दिर के ऊपरी भाग में अनगिनत गौक्षुर (जैम्ज फरगूसन ने इन्हें **Horse Shoe** लिखा है) अंकित हैं जो उस समय की कला का अभिन्न अंग रहे हैं। मन्दिर शिखर को इस ढंग से सजाया गया है, मानो मन्दिर का मुकुट (ताज) अभिषेक किया गया हो । डियोढ़ी (वेदी) और सभा मण्डप के स्तम्भ गोलाकार हैं जिनके मस्तक (ऊपरी भाग) को चोकोर पत्थर से कलात्मक रुप से सजाया गया है, सभी स्तम्भ आकार एवं दूरी की दृष्टि से समान अनुपात में लगाए गए हैं । मन्दिर के स्तम्भ अत्यन्त कला-त्मक हैं, जिन्हें हिन्दू कैरोथियन और आईनिक (ग्रीक व रोमन) कला का संगम कहा जा सकता है। इन स्तम्भों में वजन को

---

*सन *1905* के विनाशकारी भूकम्प में, मन्दिर की दीवारों में बनाए गए इन छोटे मन्दिरों को सर्वाधिक क्षति पहुंची थी। तत्पश्चात की गई मुरम्मत और प्राचीन वास्तू कला की सुन्दरता में धरती और आकाश का अन्तर आ गया है।

सहने की अधिक क्षमता है और देखने में भी आकर्षक लगते हैं। यह वास्तू कला युरोप वालों के लिये भी अनुकरणीय है। अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि स्तम्भों का यह रुप पहले पहल कब अपनाया गया था' किन्तू ऐसे लगता है कि दूसरी शताब्दी में ऐसे स्तम्भों का निर्माण सम्भव हो गया होगा। श्री यजना, अलौरा और अजन्ता के भीति-चित्रों से यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। ऐसे चिन्ह ईरान में भी विद्यमान हैं। सभा मण्डप के चारों मध्य वर्ती स्तम्भों के मध्य मन्दिर की छत में घंटीनुमा' गोलाकार गुम्बद बनाया गया है' जो कला की दृष्टि से कलासकिल होंने के साथ-साथ भारतीय सौन्दर्य वादी सजावट के अनुपम रुप को दर्शाता है। यह काल गुप्त वश का हो सकता है। (400 600 **AD**) इसके पश्चात घंटी जैसे गुम्वद प्रचलित नहीं रहे' इस के बाद भारतीय वास्तू कला में ऐसा कहीं दिखाई नहीं देता है''। जैम्स फरगूसन के अतिरिक्त जिन विश्व विख्यात विद्वानों ने इस प्राचीन मन्दिर को देखा और प्रभावित हुए हैं' कुछ एक के नाम इस प्रकार हैं- **Sir Alaxandar Cunningham, Director General of Archaeology,** *DR M.A. STEIN,* **Praicipal of oriental College of Lahore,** *DR BURGESS;DR SCHRAM;DR KEILORN* **and** *J.E. Fleet* आदि। इन सभी स्कालरों ने अपनी पुस्तकों में मन्दिर की शोधपरक जानकारी दी है' यद्यपि यह अन्तिम नहीं है।

श्री बाबा बैजनाथ जी की कृपा से' लेखक को मन्दिर के प्रागंण में बैठने तथा देव दर्शन करने का सौभाग्य लगभग 35 वर्षों से प्राप्त हो रहा है और बैजनाथ क्षेत्र, मन्दिर और देव

मूर्तियों आदि के बारे में नित नए नए तथ्यों का स्फुर्ण उभरता रहता है। इस अत्यन्त प्राचीन सिद्ध स्थान और अनुपम कला संगम मन्दिर के विषय में अन्तिम बात कहना अहं पुष्टि ही कही जायेगी। प्रत्यक्ष' प्रमाण और अनुमान पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर कुछ लिखने का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। वास्तू कला एवं प्राचीनता की दृष्टि से यह मन्दिर उत्तरी भारत में अपना प्रथम स्थान रखता है। शताब्दियों पूर्व इस सदूर' पहाड़ी व वन्य प्रदेश के जिन राजाओं के राज्य काल में ऐसे उच्चकोटी के विद्वान और कलाकार समादृत थे' उन राजाओं का कला के प्रति प्रेम और जिन वास्तूकारों ने इस मन्दिर का निर्माण किया है वे निश्चित ही महान एवं अपनी कला-साधना के प्रति पूर्णता: समर्पित थे। जिन धर्मात्मा पुरुषों ने इस विशिष्ट मन्दिर का निर्माण कराया, आने बाली पीढ़ियां उनकी सदाऋणी रहेंगी। यह श्री शिव जी की कृपा और प्रसाद का ही फल था कि इन्होने अपनी पुन्य आय का एक बहुत बड़ा भाग इस मन्दिर के निमित लगाया।

चमत्कारी सिद्ध स्थान—

बैजनाथ के परम प्राचीन सिद्ध स्थान और श्री शिव जी के चमत्कारों का इस लघु पुस्तिका में वर्णन कर पाना कठिन है। इनके नित नये घटित होने बाले अनेक चमत्कारों के साक्षी अथवा कृपा पात्रों के दर्शन होते ही रहते हैं। अपार कृपा सिन्धु बाबा बैजनाथ जी को इनके अनुग्रह के कारण' इन्हें भोले बाबा और भोले नाथ जी के नाम से याद किया जाता है, जो शरण में आए की सच्चे दिल से की गई प्रार्थनाओं को पूर्ण करते हैं।

सच्चे मन से आया श्रद्धालु कभी रिक्त हाथ नहीं जाता।

ॐ नमः शिवाय शुभं शुभं कुरु कुरु शिवाय नमः ॐ

बैजनाथ मन्दिर की परम्पराएं

❀ □ □ ❀

मकर सक्रांति– इस अवसर पर गाए के घी को जल द्वारा शुद्ध करके श्री शिवलिंग पर लेप किया जाता है जो आठ दिन रहता है। इसे "घृतमण्डल" के नाम से जाना जाता है।

माघ कृष्ण चत्तुर्दशी– इस धर्म स्थल की प्राचीन' मूल परम्परा है' जिसे **"श्री तारा रात्री"** के नाम से जाना जाता है। इस जगत् विख्यात महात्मय का वर्णन श्री शि० पु० अष्टम ख० के चोदहवें अध्याय में उत्तर दिशा के श्री चन्द्र भाल बैद्यनाथ ज्योत्तिर शिवलिंग के सम्बन्ध में आता है। **इस अवसर पर** व्रत' रात जाग्राता और क्षीर गंगा में स्नान होता है। श्री चन्द्र मौली शिव जी के इसी उत्सव के नाम पर कौरवों ने पाण्डुओं को वारणावत्त में भेजा था (पिछले 50 वर्षों से मन्दिर की परिक्रमा में अग्नि जलाने की मनाही हो जाने पर, तथा इन दिनों में अधिक सर्दी हौने से रात जाग्राता नहीं हो पाता है और लोग धीरे धीरे इस प्राचीन मूल परम्परा को भूलते चले जा रहे हैं)

शिव रात्रो– इस अवसर पर व्रत' रात जाग्राता' पूजा और क्षीर गंगा में स्नान होता है। पांच दिन मेला लगता है।

होली– इस अवसर प्रर द्वादशी को मन्दिर में होली का ध्वज चढ़ता है और चार दिन होली के ध्वज को लेकर गाजे वाजे

सहित मन्दिर के मुख्य पुजारी साथ लगते ग्रामों में होली खेलते हैं। पूर्णमासी के दिन (द्वन्दोच्छ) होलिका माता की (मन्दिर में) पूजा कर के रात्री को होली जलाई जाती है। 150 वर्ष पूर्व बैजनाथ और पपरोला के निवासी विनवा नदी के दोनों ओर के ऊंचे टीलों पर खड़े होकर खरवान (कर वाण गोफिया) द्वारा एक-दूसरे पर पत्थर चलाते थे और 50 वर्ष पूर्व तक पूर्णमासो को ग्रामों से लोग आकर दो भागों में बंट कर आधे मन्दिर के द्वार से प्रवेश करते थे और आधे इन्हें रोकते थे इसे हुल्ल (हुल्ला) कहा जाता था (खरवाण और हुल्ल के आयोजन एक प्रकार के युद्ध अभ्यास हुआ करते थे)।

वैसाख सक्रांन्ति– इस अवसर पर श्री शिवलिंग पर जल कलश चढ़ता है। सन्धया समय उच्चराशी के सूर्य की किरणें गर्भगृह के अन्दर सीधी श्री शिवलिंग पर आ जाती हैं।

श्रावण मास– प्रत्येक सोमवार को क्षीर गंगा में स्नान होता है।

दशैहरा (विजय दशमी)– यह उत्सव यहां साधारण ढंग से मनाया जाता है। कुछ वर्ष पूर्व यहां भी रावण और कुम्भ कर्ण आदि के पुतले जलाने का आयोजन शुरु किया गया था परन्तु लगातार तीन सालों में आयोजकों के साथ भीषण दुर्घटनाएं घटती चली गईं और यह आयोजन बन्द करना पड़ा था। (लंका-पति रावण ने यहां श्री शिव जी की उपासना की थी और श्री शिव जी को अपने भक्त का इनके सम्मुख जलाया जाना मन्जूर नही हुआ)।

पंच भीषम– चतुर्दशी को श्री द्वन्दोच्छ माता का विशेष

पूजन होता है। धूड़ा पेठा (सफ़ेद कदु) के ऊपरी भाग को काट कर इस में दीपक जला कर पूजा की जाती है और रात्री को मन्दिर के ऊपर से चारों तरफ अखरोटों की वर्षा की जाती है इसे **"खोड़ मार"** कहा जाता है।

कुछ एक प्राचीन परम्पराओं की संक्षिप्त में दी गई जानकारी से पाठक वृन्द इस धर्म स्थल की महत्ता तथा प्राचीनता का अनुमान सहज में ही लगा सकते हैं।

श्री शक्ति शिव क्षेत्र बैजनाथ मन्दिर प्राचीन तान्त्रिक सिद्ध पीठ है जहां श्री शिवजी ने महोग्रा (तारा) की उपासना और त्रेता युग के महान तान्त्रिक लंका पति रावण ने श्री शिवजी से वरदान प्राप्त किया था। यह प्राचीन धर्मस्थान उत्तरी और दक्षिणी भारत को जोड़ने वाली प्राचीन काल से चली आ रही एक महत्व पूर्ण कड़ी है। ऐसे रहस्यमयी सिद्ध स्थान के सम्बन्ध में प्रस्तुत की गई जानकारी के लिये एक (उर्दू) कवि के शब्दों में :—

खिरदो जंनू ने मिल के उठाए कई हजाब।
लेकिन चमन का राज अभी तक चमन में है॥

बैजनाथ के अन्य धर्म स्थल

[संक्षिप्त परिचय]

✽ ✽ ✽ ✽

प्राचीन समय में बैजनाथ का धर्मस्थल उत्तरी भारत में शाक्त और शैव धर्मों व संस्कृति का केन्द्र था। यहाँ पर अनेक भव्य मन्दिर विद्यमान थे जिनके खण्डहर जगह-जगह बिखरे हुए और भूमि में दबे पड़े हैं। इन ध्वस्त हो चुके प्राचीन मन्दिरों में से कुछ एक स्थानों पर पिछले चार सो वर्षो की अवधि में साधारण रुप से छोटे मन्दिरों का पुनः निर्माण कराया गया है। धर्म ग्रन्थों में उपलब्ध जानकारी 'इतिहास' जनश्रुतियों और धर्म व संस्कृति की दृष्टि से यहां के सभी स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। विस्तार में न जाकर पाठकगणों की सेवा में इन स्थानों के केवल नाम का ही उल्लेख किया जा रहा है। **क्षीर गंगा, सिद्धेश्वर महादेव** (सिद्ध नाथ)' तारा दुर्गा के रहस्यमयी चार स्थान हैं' वर्तमान में इन्हें **'श्री चामुण्डा माता' तारा केदार नाथ' आशापुरी** (नील सरस्वति) और **तारिणी देवी** के नामों से जाना जाता है (ध्वस्त्त हो चुके प्राचीन मन्दिरों के खण्डित शिलापट व मूर्तियां भूमि में दवी पड़ी मिलती हैं)। **अवाहि नाग–** अवाहि शव्द अहि+ईश का अपभ्रंश है (अर्थात सर्पो के ईश्वर) और **श्री शीतला माता**। यह सभी स्थान दर्शनीय' हैं तथा प्राचीन काल में इन सभी स्थानों पर भव्य मन्दिर मौजूद थे।

लुप्त होते जा रहे स्थान– गुप्तेश्वर' रावणेश्वर' गणपति' भूतनाथ मच्छिद्रनाथ (सिद्ध नाथ,)' त्रिलोक नाथ' गूगोटी' चरणपादुका' निरालय चार शिवलिंग (जिनके नामों का पता नहीं चलता है) और किरनाले जल स्रोत आदि प्राचीन स्थान हैं। जो कि लुप्त होते जा रहे हैं।

लुप्त हो चुके स्थान- नन्दीकेश्वर (ब्लाक समिति के कार्यालय के पास)। गणेश बाजार के उत्तर में यहां के राजवंश के मृतकों की मूर्तियां (मुहरे) और सरोवर व राज निवास। **भूरी चक्का (Oath Stone ; तप्त कुण्ड, सति कुण्ड, चक्रनाथ, त्रिवेणी, प्रयाग वड़ और दानवड़** आदि। बैजनाथ शिवक्षेत्र के शिवगणों से सम्बन्धित **गणक्षेत्र** वर्तमान में गणखेत्तर ग्राम के नाम से जाना जाता है, इसी प्रकार के अन्य भी स्थान व नाम हैं जो कि इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।

H R T C वर्कशाप के पास श्री भुवनेश्वरी माता और गणेश बाजार रेलवे क्रासिंग के पास **अम्बिका माता** के नये मन्दिर बनाए गए हैं।

श्री बैद्यनाथ तारा सिद्ध पीठ (शक्ति यन्त्र त्रिभुज) के तीनों कोणों पर तथाबैजनाथ से पाँच-पांच किलोमीटर की दूरी पर **श्री मुकुटेश्वर, पल्लिकेश्वर और महांकालेश्वर** के प्राचीन सिद्ध स्थान हैं। ध्वस्त हो चुके प्राचीन मन्दिरों की निशानियां अभी भी मौजूद हैं, इन सभी सिद्ध स्थानों पर अलग से एक पुस्तक लिखी जा सकती है।

बैजनाथ से कुछ दूरी के स्थान– श्री बाबा बालक नाथ जी (काठक सकड़ी)' नागुल्हिया महादेव' सिमसा माता' त्रिवेणी महादेव और गढ़वाली माता आदि स्थान दर्शनीय हैं। उत्तर में धौलाधार के जगंलों व वर्फानी पहाड़ों में अनेक स्थान धर्म व संस्कृति से सम्बन्धित हैं। जैसे कि– **ततवानी** (गर्मजल स्रोत)' **जीतजन' प्रसद्देदाघोठ' मन्दिर' भगमाछर'** (भस्मासुर) **गोरजां दा रिढ़ा** (गोरजां शिखर)' **थमसर' कालीकुण्ड' हनुमानटिवा व कैलास' कुलाह**(कुराह कार्तिकये मन्दिर) और **मणीमहेश कैलास कुलाह** आदि स्थानों से सम्बन्धित अनेक जन श्रुतियां पौराणिक कथाओं से मिलती जुलती हैं।

पर्यटन

सर्व सुविधा सम्पन्न धर्म क्षेत्र बैजनाथ के स्वास्थवर्धक जल वायु' प्राकृतिक सौन्दर्य और प्राचीन शिव मन्दिर' पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण रखते हैं। यातायात की सुविधाओं के कारण यहां सारा साल ही यात्री आते रहते हैं। रेल मार्ग द्वारा यह स्थान पठानकोट से जुड़ा हुआ है और इसके साथ बैजनाथ पपरोला व बैजनाथ मन्दिर दो रेलवे स्टेशन लगते हैं। देहली' हरिद्वार' अमृतसर' जम्मू और हिमाचल के सभी मुख्य स्थानों के लिये यहां से सीधी बसें चलती हैं। ठहरने के लिये डाकबगंला' रैस्ट–हाऊस' होटल' गैस्ट हाऊस और धर्मशाला आदि मौजूद हैं। जुलाई अगस्त में बरसात और दिसम्बर, जनवरी में सर्दी अधिक होती हैं

(बर्फ काफी नजदीक आ जाती है) मार्च से मई और सितम्बर से नबम्बर के महीने पर्यटन के लिये अच्छे रहते हैं।

मन्दिर के चारों तरफ मखमली' (हरी घास दूर्वा' वाली) खुली पार्क में शीतल स्वच्छ वायू के झोकों से यात्रियों का मन खिल उठता है। सामने हरे भरे जंगल' पहाड़ियां और बर्फानी पहाड़ हैं जिनकी गोद में से अपनी सहायक चार नदियों को साथ लेकर विनवा (कन्दक विदुंका) नदी उछलती कूदती हुई' पांच वल खाते हुए श्री शिव शक्ति मन्दिर की परिक्रमा कर रही है। पग पग पर निर्मल शीतल जल के झरनों और कूहलों (छोटी छोटी नहरों) द्वारा यह क्षेत्र सारा साल हरा भरा वसन्तमयी रहता है। प्राकृति मां ने सभी सुन्दर दृष्य यहां एक साथ ही प्रस्तुत कर रखे हैं जहां सर्व श्रृंगार किये हुए श्री चन्द्रभाल बैद्यनाथ गिरिपुत्री सहित निवास कर रहे हैं।

पूजा

धर्म ग्रन्थों में, देवी देवताओं कीकृपा से विशेष फलों की प्राप्ती के लिये, भिन्न भिन्न प्रकार की पूजा पद्धतियां बतलाई गई हैं' जिनकी जानकारी मन्दिर के मुख्य पुजारी जी या कर्मकाण्ड के ज्ञाता किसी विद्वान से पता कर लेनी चाहिये। जालन्धर पीठ महात्म्य में लिखा है कि, मन्दिर में श्री शिव जी को नमस्कार करे तत्पश्चात क्षीर गंगा जा कर स्नान करके (क्षीर) गंगा जल द्वारा श्री शिव जी का पूजन करना चाहिये।

पूजा में सोलह उपचार बतलाए गए हैं- ध्यान, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत्त, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, प्रदक्षिणा, और नमस्कार। सोलह उपचार करने की पूजन में सामर्थ्य न हो तो केवल आठ उपचार से पूजा करे- गन्ध, पुष्पंच, धूपं. दीप, मन्न निवेदनम। ताम्बूलंचे नमस्कारभ्य दक्षिणाक्षमापने॥ अथवा छः उपचार से पूजन करे स्नान, गन्ध, फूल, धूप, दीप, और नैवेद्य। इतनी भी सामर्थ्य न हो तो तीन उपचार, स्नान नैवेद्य और चरणों पर गिर पड़े, पुष्प चढ़ाए। तीन प्रदक्षिण करने से पूजन सम्पूर्ण दोषों से निवृत होता है (श्री शिवजी की आधी-आधी करके एक प्रदक्षिणा की जाती है)। जो आदमी लाचार हो तो उसको चलते-फिरते सर्वकाल में केवल स्मरण करने से पूजन का फल प्राप्त होता है। जो कोई मनुष्य दो या तीन विल-पत्र भी शुद्धता पूर्वक श्री शिवजी पर चढ़ावे तो उस पर भी श्री शिव जी प्रसन्न हो जाते हैं। जो विल-पत्र हरा व ताजा न मिले तो (चालीस दिन तक का) सुखा विल-पत्र जल द्वारा शुद्ध करके चढ़ाया जा सकता है। विल पत्र रोज चढ़ाने के पीछे धो कर रख लेने से भी सात दिन तक हर रोज चढ़ाया जा सकता है। श्री शिव जी के पंचाक्षरी मन्त्र (ॐ नमः शिवाय) से निश्चय पूर्वक बिल पत्र, श्री शिव जी पर चढ़ाने से बड़ा फल प्राप्त होता है (चतुर्थी, अष्टमी, नवमीं, चौदस और अमावसो व सक्राँन्ति तथा सोमवार को विल पत्र का तोड़ना मना है-न तोड़े)।

मन्त्रों एवं स्तोत्रों को गुरु परम्परा से अर्थ सहित प्राप्त कर के, भाव सहित इनके जप या उच्चारण से विशेष शुभ फल की प्राप्ती होती है।

शिवमहिम्नःस्त्रोत्र

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

अर्थात— 'महेशसे बढ़कर (उत्तम) कोई देवता नहीं है, (इस) शिवमहिम्नः स्तोत्रसे बढ़कर कोई स्तोत्र नहीं है। अघोर-मन्त्र से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है, गुरुसे बढ़कर कोई तत्त्व नहीं होता है' ॥३५॥

(गीता प्रैस गोरखपुर के बुक स्टालों पर मिल जाता है)

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरुपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरुपम् ।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकारमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥२॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं
मनोभूतकोटिप्रभासी शरीरम् ।

स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ ३ ॥
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं-
मखण्डं भजे भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५ ॥
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः ।
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः ॥६॥
न यावदुमानाथपादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा देव तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं
प्रभो पाहि शापान्नमामीश शम्भो॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ।

अष्टमूर्तीस्तोत्र

त्वं भाभिराभिरभिभूय तमस्समस्तमस्तं नयस्यमिमतानि निराचराणाम्
देदीप्यसे दिवमणे गगने हिताय लोकत्रयस्य जगदीश्वर तन्नमस्ते ।
लोकेऽतिवेलमतिवेलमहामहोभिर्निर्भासि कौ च गगनेऽखिललोकनेत्रः
विद्राविताखिलतमास्सुतमो हिमांशो पीयूषपूरपरिपूरित तन्नमस्ते ।
त्वं पावने पथि सदा गतिरप्युपास्यः कस्त्वां विना भुवनजीवन जीवतीह
स्तब्धप्रभञ्जनविवर्धितसर्वजन्तो संतोषिताहिकुल सर्वग वै नमस्ते ।
विश्वैकपावक नतावक पावकैकशक्ते ऋते मृतवतामृतदिव्यकार्यम् ।
प्राणिष्यदो जगदहो जगदान्तरात्मंस्त्वं पावक. प्रतिपदं शमदो नमस्ते।
पानीयरुप परमेश जगत्पवित्र चित्रातिचित्रसुचरित्रकरोऽसि नूनम् ।
विश्वं पवित्रममलं किल विश्वनाथ पानीयगाहनत एतदतो नतोऽस्मि
आकाशरुपबहिरन्तरुतावकाशदानाद् विकस्वरमिहेश्वर विश्वमेतत्
त्वत्तस्सदा सदय संश्वसिति स्वभावात् संकोचमेति भवतोऽस्मि नतस्ततस्त्वाम् ।
विश्वम्भरात्मक विभर्षि विभोऽत्र विश्वं को विश्वनाथ भवतोऽन्यत-मस्तमोऽरिः
सत्वं विनाशय तमो मम चाहिभूष ! स्तव्यात्परः परपरं प्रणतस्तस्त्वाम्
आत्मस्वरुप तव रुपपरम्पराभिराभिस्ततं हर चराचररुपमेतत् ।
सर्वान्तरात्मनिलय प्रतिरुपरुप नित्यं नतोऽस्मि परमात्मजनोऽष्टमूर्ते
इत्यष्टमूर्तिभिरिमाभिरबन्धबन्धो युक्तः करोषि खलु विश्वजनीनमूर्ते
एतत्ततं सुविततं प्रणतप्रणीत सर्वार्थसार्थपरमार्थ ततो नतोऽस्मि ।
(शि० पु० रु० स० युद्ध० ख० ५० । २४-३२)

(उदार महानुभाव पण्डित और संतजन "श्री शक्ति शिव तत्व" पर कुछ लिखने की मेरी इस बाल चपलता के लिए क्षमा करेंगे)

श्री शक्ति–शिव तत्व

श्री शिव और शक्ति ये परम शिव अर्थात परम तत्व के ही रुप हैं। शिव कूटस्थ तत्व है और शक्ति परिणामिनो है। विविध वेचित्र्यपूर्ण संसार के रुप में अभिव्यक्त शक्ति का आधार एवं अधिस्ठान शिव हैं। शिव और शक्ति एक दूसरे से अभिन्न हैं। जगतृगुरु आद्य शंकराचार्य जी ने शक्ति को शिव रुप आत्मा का शरीर कहा है "शरोरं तत्वं श्म्भो शशिमिहिक्षोरुहयगं। तवात्मानं मन्ये भगवति भवात्मानमन धूभं।।" तथा "शिवा शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्त: प्रभवित्तुम। नच देवं देवो न खलु कुशल: स्पन्दिनुपि।।" शिव चेतना का अव्यक्त रुप हैं तो शक्ति उसका सक्रिय रुप है। श्वे० श्व० उ० 4-10 में कहा गया है—"मायांतु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम। तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदजगत्।।" अर्थात – माया तो प्रकृति को समझना चाहिए और माया पति महेश्वर को समझना चाहिए, उसी के अंगभूत कारण कार्य समुदाय से यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो रहा है। शिव ही अपनी शक्ति द्वारा जीव मन (अन्त.कर्ण) और शरीर (जगत्) बन जाते हैं। योग वा० श्लोक 678-680 में ब्रह्म को शान्त शिव बतलाया गया है और कहा है कि स्पन्दरुपमाया की शक्ति के प्रभाव से ही परमात्मा का अनुभव होता है। यह शक्ति बल प्रभाव से अपराजित, दृढ़ धारणा के कारण दुर्गा, लयरुप होने के कारण गायत्री, संसार को पैदा करने के कारण सावित्री, नदियों का भण्डार होने के कारण सरस्वति और आनन्दमयी होने के कारण **उमा** कही जाती है।

शिव पुराण में शिव शक्ति को एक ही तत्त्व बताया गया है "एकश्चैवशिव: शक्तिरिति भावो विभियते'। शिव और शक्ति में अभेद भाव ही अद्वैत का सिद्धान्त हैं। स्वामी राम कृष्ण परम हंस और तुलसी दास जी ने शक्ति और शक्तिमान के लिये वाणी और अर्थ तथा सागर और लहर के दृष्टान्त दिये हैं। एक शहनाई का पौं रुप शब्द है तो दुसरा इसकी स्वर लहरी। तन्त्रो के अनुसार प्रकाश ही शिव है और विमर्श ही शक्ति है। प्रकाश के अभाव से दर्पण में स्थित प्रतिबिम्ब जैसे प्रतिबिम्ब रुप में नहीं भास्ता। (अथवा प्रतिबिम्ब का अस्तित्व प्रकाश से है), उसी प्रकार पराशक्ति भी प्रकाश स्वरुप परम शिव के सानिध्य से ही अपने अन्त: स्थित विश्व प्रपंच को प्रकटित करने में समर्थ होती है। सारे तत्त्व इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध से ही उद्भूत होते हैं। शिव-शक्ति परस्पर पूर्क (**Complementary**) और परिशिष्ट **Supplementary** हैं।

माया शक्ति चेतन के प्रतिबिम्ब का आश्रय है, इससे चेतना को प्राप्त हुए के समान होता है, इस से जगत् की व्यवस्था का कारण है। इसी माया रुप शक्ति के सम्बन्ध से ब्रह्म ही ईश्वर रुपता को प्राप्त होता है और पाँच कोष रुप उपाधि के सम्बन्ध से ब्रह्म जीवरुप (जीवात्मा रुप) को प्राप्त होता है।

शिवतत्त्व

शिव पुराण कैलास संहिता में ॐ और शिव का एक ही रुप में वर्णन किया गया है, श्री शिव जी कहते हैं कि, "प्रणव मन्त्र का अर्थ ज्ञान ही मेरा ज्ञान है, मैं ॐ-एकाक्षर मन्त्र में सर्व व्यापक रुप से रहता हूं।" पाँच वर्ण के रुप वाले को प्रणव कहते हैं।

"अ" कार विधि, "उ" कार विष्णु, "म" कार रुद्र, "विन्दु" महेश्वर और "नाद" को दया सागर सदा शिव कहा गया है। इन पाचों वर्णो में पांच ब्रह्म सद्य, वामदेव, घोर, पुरुष और ईशान निवास करते हैं, ये सभी श्री शिव जी की ही मूर्तियां हैं। ईशान मूर्ति, प्रधान और क्षेत्रज्ञ है, पुरुष मूर्ति-अव्यक्त है, अघोर मूर्ति-बुद्धितत्त्व है, वामदेव मूर्ति-अहंकार की अधिष्टात्री है और सद्योजात नाम की मूर्ति-मन की अधिष्टात्री हैं।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तंत्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

'हे शरण देने वाले ! ओम्—यह शब्द अपने व्यस्त (पृथक्-पृथक् अक्षर वाले) अकार, उकार, मकाररुप से तीनों वेद (ऋक्, यजु, साम), तीनों अवस्था (जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति), तीनों लोक (स्वर्ग-भूमि-पाताल), तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश), तीनों शरीर (स्थूल-सूक्ष्म-कारण), तीनों रुप (विश्व-तैजस-प्राज्ञ) आदि के रुपमें आपका ही प्रतिपादन करता है तथा अपने अवयवोंके समष्टि-(संयुक्त-समस्त-) रुप (ओम्-) से निर्विकार निष्कल तीन अवस्था एवं त्रिपुटियोंसे रहित आपके तुरीय स्वरूपकी सूक्ष्म ध्वनियोंसे ग्रहणकर प्रतिपादन करता है।' (ॐ आपके स्वरूपका सर्वतः निर्वचन करता है) ॥२७॥ (शि. महि. स्तोत्र)

माण्डूक्योपनिषद के बारहवें मन्त्र में प्रणव (ओंकार) को व्यवहार में न आने वाला, प्रपञ्च से अतीत शिवोऽद्वैत, पूर्ण ब्रह्म बतलाया है।

माण्डूक्योपनिषद्

ओमित्येतदक्षरमिदँ सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव । यच्चान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योङ्कार एव ॥ १॥

ॐ ऐसा यह, अक्षर (अविनाशी परमात्मा) है, यह सम्पूर्ण जगत्, उसका ही उपव्याख्यान अर्थात् उसीकी निकटतम महिमाका लक्ष्य करानेवाला है, भूत (जो हो चुका) वर्तमान (और) भविष्यत् (जा होनेवाला है) यहसब का सब जगत् ओंकार ही है, तथा जो ऊपर कहे हुए तीनों कालोंसे अतीत दूसरा (कोई तत्त्व है); वह भी ओंकार, ही है ॥१॥

सम्बन्ध-सब कुछ ओंकार कैसे है, कहते हैं—

सर्वँ ह्येतद् ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म सोऽयमात्मा चतुष्पात् ॥२॥

क्योंकि यह सब-का सब ब्रह्म है,यह परमात्मा (जो इस दृश्य जगत्में परिपूर्ण है) ब्रह्म है, वह यह परमात्मा चार चरणोंवाला है ॥२॥

जागरितस्थानो बहिष्प्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूल-भुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥३॥

जाग्रत् अवस्था की भांति यह सम्पूर्ण स्थूलजगत् जिसका स्थान अर्थात् शरीर है, जिसका ज्ञान इस बाह्य जगत्में फैला हुआ है, भूः, भुवः आदि सात लोक ही जिसके सात अङ्ग हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच प्राण और चार अन्तःकरण – ये विषयों को ग्रहण करने वाले उन्नीस समष्टि 'करण' ही जिसके उन्नीस मुख हैं, जो इस स्थूल जगत्का भोक्ता—

इसको अनुभव करने वाला तथा जानने वाला है, वह वैश्वानर (विश्वको धारण करनेवाला) परमेश्वर, पहला, पाद है ॥३॥

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक् तैजसो द्वितीयः पादः ॥४॥

स्वप्नकी भांति सूक्ष्म जगत् ही जिसका स्थान है, जिसका ज्ञान संकल्पमय सूक्ष्म जगत्में व्याप्त है, पूर्वोक्त सात अङ्गोंवाला (और), उन्नीस मुखोंवाला:, सूक्ष्म जगत्का भोक्ता: तैजस-प्रकाशका स्वामी सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ, उस परब्रह्म परमात्माका दूसरा पाद है ॥४॥

यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते न कञ्चन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम् । सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः पादः ॥५॥

जिस अवस्था में सोया हुआ (मनुष्य) किसी भी भोग की कामना नहीं करता; कोई भी स्वप्न नहीं देखता, वह सुषुप्ति-अवस्था है, ऐसी सुषुप्ति की भांति जो जगत् की प्रलय-अवस्था अर्थात कारण—अवस्था है, वही जिसका शरीर हैं, जो एकरूप हो रहा है, जो एकमात्र घनीभूत विज्ञानस्वरुप है, जो एकमात्र आनन्दमय अर्थात् आनन्दस्वरुप ही है, प्रकाश ही जिसका मुख है, जो एकमात्र आनन्द का ही भोक्ता है (वह) प्राज्ञः (ब्रह्म का) तीसरा पाद है ॥५॥

सम्बन्ध—ऊपर बतलाये हुए ब्रह्म के पाद वैश्वानर, तैजस और प्राज्ञ किस के नाम हैं इस जिज्ञासा पर कहते हैं-

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ॥६॥

यह सब का ईश्वर हैं, यह सर्वज्ञ है, यह सबका अन्तर्यामी है, यह सम्पूर्ण जगत् का कारण है, क्योंकि समस्त प्राणियों का उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का स्थान यही है ॥६॥

सम्बन्ध–अब पूर्णब्रह्म परमात्मा के चौथे पाद का वर्णन करते हैं—

नान्तःप्रज्ञं न बहिष्प्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्। अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः ॥७॥

जो न भीतर की ओर प्रज्ञा वाला है, न बाहर की ओर प्रज्ञा वाला है, न दोनों ओर प्रज्ञा वाला है, न प्रज्ञान घन है, न जानने वाला है, न नहीं जानने वाला है, जो देखा नही गया है, जो व्यवहार में नही लाया जा सकता, जो पकड़ने में नही आ सकता, जिस का कोई लक्षण (चिन्ह) नहीं है जो चिन्तन करने में नहीं आ सकता, जो बतलाने में नहीं आ सकता, एकमात्र आतम सत्ता की प्रतीति ही जिसका सार (प्रमाण) है, जिस में प्रपञ्च का सर्वथा अभाव है, ऐसा सर्वथा शान्त कल्याणमय अद्वितीय तत्त्व (परब्रह्म परमात्मा का) चौथा पाद है, (इस प्रकार ब्रह्मज्ञानी) मानते हैं. वह परमात्मा है, वह जानने योग्य (है) ॥७॥

सम्बन्ध–उक्त परब्रह्म परमात्मा को उनके वाचक प्रणव के साथ एकता करते हुए कहते है—

सोऽयमात्माध्यक्षरमोङ्कारोऽधिमात्रं पादा मात्रा मात्राश्च पादा अकार उकारो मकार इति ॥८॥

वह (जिसको चार पाद वाला बताया गया है), यह परमात्मा (उसके वाचक) प्रणव के अधिकार में (प्रकरण में) वर्णित होने के कारण तीन मात्राओं से युक्त ओंकार है, 'अ' 'उ' (ओर) 'म' ये (तीनों) मात्राएं ही (तीन) पाद हैं, और (उस ब्रह्म के तीन) पाद ही (तीन) मात्राएं हैं ॥८॥

सम्बन्ध—ओंकार की किस मात्रा से ब्रह्म के किस पाद की एकता है और वह क्यों हैं, इस जिज्ञासापर तीन मात्राओं का रहस्य समझाने के लिये प्रथम पहले पाद और पहली मात्रा की एकता का प्रतिपादन करते हैं—

जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः प्रथमा मात्राऽऽप्तेरादि-मत्त्वाद्वाऽऽप्नोति ह वै सर्वान्कामानादिश्च भवति य एवं वेद ॥९॥

(ओंकार की) पहली मात्रा अकार ही (समस्त जगत् के नामों में अर्थात् शब्द मात्र में) व्याप्त होने के कारण और आदि वाला होने के कारण जाग्रत् की भांति स्थूल जगत् रूप शरीर वाला वैश्वानर नामक पहला पाद है, जो इस प्रकार जानता है, वह अवश्य हो सम्पूर्ण भोगों को प्राप्त कर लेता है, और सबका आदि (प्रधान) बन जाता है ॥९॥

सम्बन्ध-अब दूसरे पाद की और दूसरी मात्रा की एकता का प्रतिपादन करते हैं—

स्वप्नस्थानतैजस उकारो द्वितीया मात्रोत्कर्षादुभयत्वा-द्वोत्कर्षति ह वै ज्ञानसंतर्ति समानश्च भवति नास्यावह्मम् वित्कुले भवति य एवं वेद ॥१०॥

(ओंकार की) दूसरी मात्रा 'उ' ('अ' से) उत्कृष्ट होने के कारण और दोनों भाव वाला होने के कारण स्वप्न की भांति

सूक्ष्म जगत् रूप शरीर वाला तैजस नामक (दूसरा पाद) है, जो इस प्रकार जानता है, वह अवश्य ही ज्ञान की परम्परा को उन्नत करता है और समान भाव वाला हो जाता है, इसके कुल में हिरण्यगर्भरुप परमेश्वर को न जानने वाला नहीं होता ॥१०॥

सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीया मात्रा मितेरपीतेर्वा मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति य एवं वेद ॥११॥

(ओंकार की) तीसरी मात्रा 'म' ही माप करने वाला (जानने वाला) होने के कारण और विलीन करने वाला होने से सुषुप्ति की भांति कारण में विलीन जगत् ही जिसका शरीर है, प्राज्ञ नामक तीसरा पाद है, जो इस प्रकार जानता है, वह अवश्य ही इस सम्पूर्ण कारण-जगत् को माप लेता है अर्थात् भली भांति जान लेता है, और सबको अपने में विलीन करने वाला हो जाता है ॥११॥

सम्बन्ध—मात्रारहित ओंकार का चौथे पाद के साथ एकता का प्रतिपादन करते हुए इस उपनिषद् का उपसंहार करते हैं—

अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एवमोङ्कार आत्मैव संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद य एवं वेद ॥१२॥

इसी प्रकार मात्रारहित प्रणव ही व्यवहार में न आने वाला प्रपञ्च से अतीत कल्याणमय अद्वितीय पूर्ण ब्रह्म का चौथा पाद है, वह आत्मा अवश्य ही आत्मा के द्वारा परात्पर ब्रह्म परमात्मा में पूर्णतया प्रविष्ट हो जाता है, जो इस प्रकार जानता है, जो इस प्रकार जानता है ॥१२॥

॥ अथर्ववेदीय माण्डूक्योपनिषद् समाप्त ॥

दो शब्द

धर्म ग्रन्थ और सन्तजन वर्तमान समय (युग) में जप और दान को श्रेष्ठ बतलाते हैं। जप का सम्बन्ध तो अपने आप से ही होता है, परन्तु दान के लिए सुपात्र भी देखा जाता है। बैजनाथ का प्राचीन धर्म क्षेत्र सुपात्रता के सभी गुणों से युक्त है। धर्म कार्यों के लिए यहाँ विशेष अवसर मौजूद हैं, जैसे कि मन्दिर में पूजा के लिए शुद्ध चन्दन, कपूर और गुग्गल धूप आदि तथा आरती के लिए घण्टी, घड़याल और शंख आदि वस्तु रुप में अर्पित किए जा सकते हैं। निर्माण कार्यो में क्षीर गंगा का मार्ग घाट, धर्मशालाएं और ध्वस्त हो चुके प्राचीन मन्दिरों के पुनः निर्माण आदि कराए जा सकते हैं। अन्न छेत्र वाल्मीकीय रामायण उ० का० अष्टसप्ततितम सर्ग: में राजा श्वेत की कथा आती है जिसे उत्तम तप द्वारा उत्तम लोक प्राप्त थे, परन्तु अन्न दान न कर सकने पर अपने मानव शरीर का ही भक्षण करना पड़ा था। श्लोक 15 में अगस्त मुनि जी राजा श्वेत से कहते हैं :-

"स्वशरीरं त्वया पुष्टं कुर्वता तप उत्तमम् ।
अनुप्तं रोहते श्वेत न कदाचिन्महामते।"

अर्थात- श्वेत ! तुम ने उत्तम तप करते हुए केवल अपने शरीर का ही पोषण किया है। महामते ! दान रुपी बीज बोए बिना कहीं कुछ भी नहीं जमता है, कोई भी भोज्य पदार्थ उपलब्ध नहीं होता है।

इसी प्रकार महाभारत में दान वीर कर्ण की कथा में भी अन्न दान की श्रेष्ठता बतलाई गई है। अन्न छेत्र जारी करने के लिये यहां उपयुक्त स्थान मौजूद हैं।

चिरकाल से इस प्राचीन धर्मस्थ[illegible]
दो भागों में विभक्त श्री शिवलिंग और प्राचीन [illegible] के दर्शन करते थे तो इनके मन में यहाँ का शास्त्र सम्मत इतिहास जानने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होती थो। श्री चन्द्रभाल वैद्यनाथ जी की कृपा तथा महात्माओं के आशीर्वाद से **"श्री शक्ति-शिव क्षेत्र बैजनाथ मन्दिर" (संक्षिप्त वर्णन)** नाम्नि इस लघु पुस्तिका में (पिछले पचीस वर्षों से) संग्रह की गई जानकारी प्रमाण, प्रत्यक्ष और अनुमान सहित प्रस्तुत की गई है। पाठक गणों की सेवा में नम्र निवेदन है कि इस लघु पुस्तिका में संक्षिप्त में दी गई जानकारी को एक साधारण प्रयास मात्र समझते हुए सभी प्रकार की त्रुटियों को क्षमा करने की कृपा करेंगे। यहां की चप्पा चप्पा भूमि से सम्बन्धित अनेक जनश्रुतियां पीढ़ियों से चली आ रही हैं। जिनकी सत्यत: प्रत्यक्ष और धर्मग्रन्थों के प्रमाणों से स्पष्ट हो जाती है। इस परम प्राचीन धर्म क्षेत्र और मन्दिर की महिमा का वर्णन कर पाना सरल नहीं है।

पाठकों के हाथों तक प्रस्तुत पुस्तिका को पहुंचाने और सहायता देते हुए उत्साह बढ़ाने के लिये सभी शुभ चिन्तकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए—

श्री बाबा बैजनाथ जी के सादर चरण कमलों में समर्पित

विनीत
चुनी लाल शर्मा
[बैजनाथ हि॰ प्र॰]

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. G-1312
Date 11-5-92
SIMLA

शि॰ महा॰ पु॰ कोटि रुद्र सं॰ 4 अ॰ ११ श्लोक २ से ५ तक

उत्तरस्यां दिशायाँ च शिवलिंगानि यानि च । तेशां महत्म्य-मनघ वद त्वं पापनाशनम् ।। सूत उवाच ।। शृणु तादरतो विप्रा श्रोत्ताराणां विशेषत: । माहात्मयं शिवलिंगानां प्रवदामि समासत: । गोकर्ण क्षेत्रमपरं महापातकनाशनम् । महावनं च तत्राऽस्ति पवित्रमतिविस्तरम् । तत्रास्ति चन्द्र-भालाख्यं शिवलिंगमनुत्तमम् । रावणेन समानीतं सद्भक्त्या सर्वसिद्धम् ।। तस्य तत्र स्थिति वैद्यनाथस्ययेव मुनिश्वरा: । सर्वलोकहितार्थाय करूणासागरस्य च ।।

अर्थात हे पापरहित, उत्तर दिशा की ओर जो-जो शिव के ज्योतिलिंग हैं, उनके पापनाशक महात्यम आप वर्णन करो सूत जी बोले हे ब्राह्मणों, 'आप आदर से सुनो मैं उत्तर के शिवलिंगों के महात्यम् संक्षेप से कहता हूं," महापातक नाश करने वाला दूसरा गोकर्ण नामक क्षेत्र है । यहां अति-विस्तार वाला अति पवित्र वन है यहां चन्द्रभाल नामक श्रेष्ठ शिव का लिंग है । यह सुन्दर भक्ति से रावण ने स्थापित किया है और सम्पूर्ण सिद्धियों का देने वाला है। हे मुनिश्वरो ! सब रंसार के हित के निमित्त दया के समुद्र उन चन्द्रभाल शिव की यहां बैद्यनाथ के समान स्थिति है ।

□❋□एक लाख श्लोकों का शिव महा पुरान १२ संहिताओं में विभक्त है इन में कोटी रुद्र संहिता के दस हजार श्लोक हैं । द्वादश-संहिता युक्त शिव पुराण इस समय प्रचलित नहीं है तथा संक्षिप्त में ही छापे जाते हैं । छः शिव पुराणों से ली गई जानकारी इस पुस्तिका में पृष्ठ 18से 25 तक संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत को गई है ।

नोट:— पुस्तिका शीघ्र छापने की वजह से जो अशुद्धियां रह गई हों निवेदन है पाठकगण इस के लिए क्षमा करगे ।

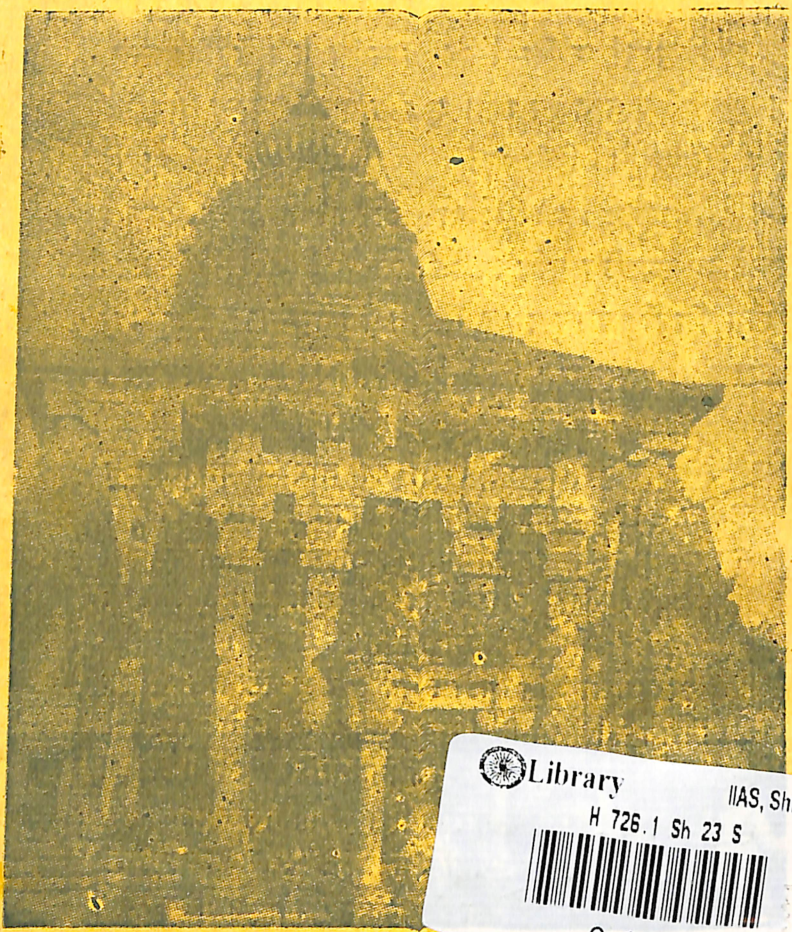

प्राचीन शिव मन्दिर, बैजनाथ
[कांगड़ा] हि० प्र०

Library IIAS, Shimla
H 726.1 Sh 23 S
G 1312